Eklavya

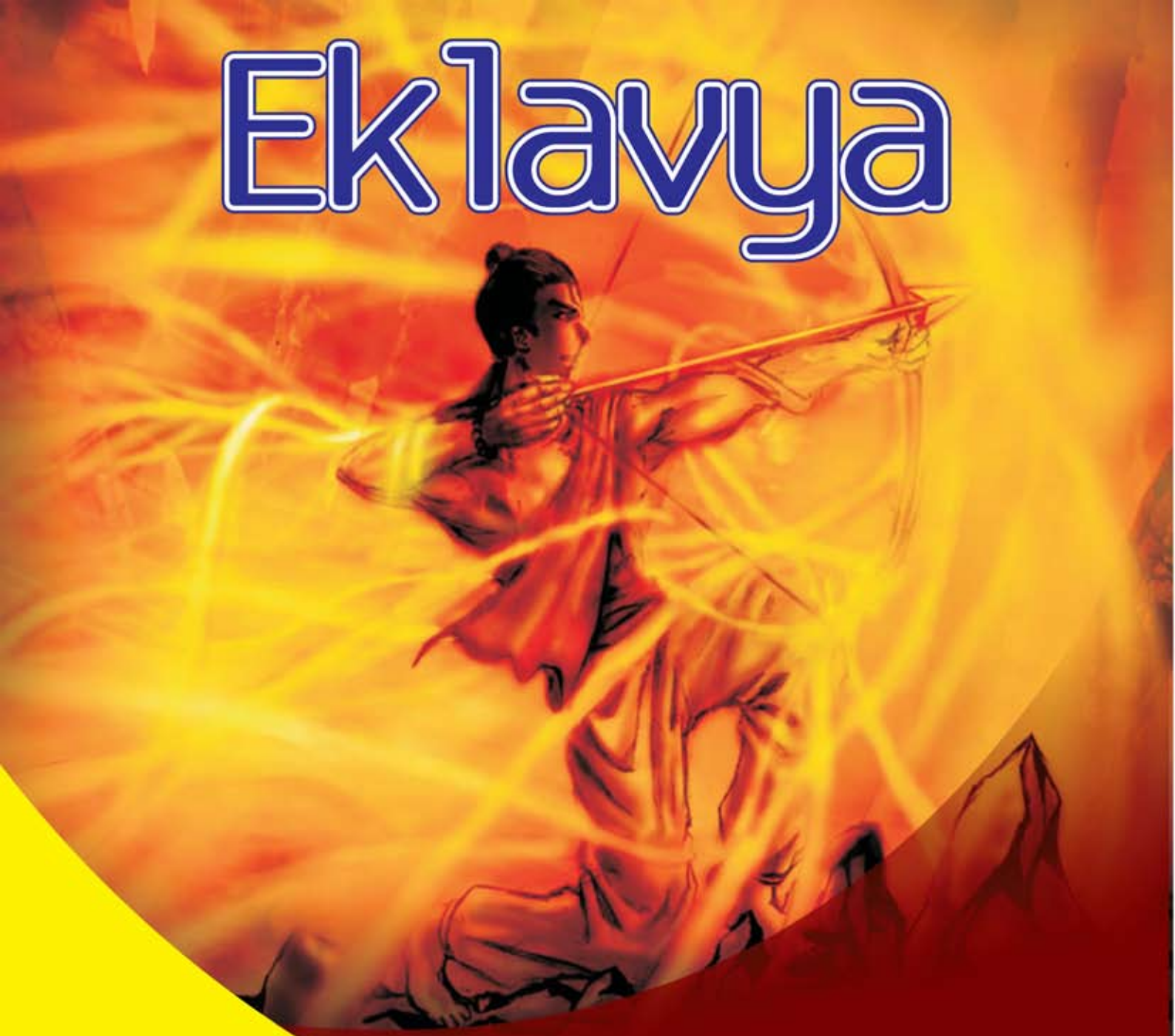

आर. एस. मोर कॉलेज
गोविन्दपुर (धनबाद)
सा विद्या या विमुक्तये

R. S. MORE COLLEGE

RATANPUR VILLAGE ROAD, GOVINDPUR
DHANBAD, JHARKHAND - 828109

: rsmorecollege@rediffmail.com
: www.rsmorecollege.edu.in

पशुपति नाथ सिंह
संसद सदस्य (लोक सभा)
धनबाद, झारखण्ड

12, विंडसर प्लेस
नई दिल्ली-110 001
दूरभाष : 011-23782666
मोबाईल : 09431115697

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंक प्रसन्नता हो रही है कि गोविंदपुर में स्थापित आर0 एस0 मोर महाविद्यालय अपनी स्थापना के गौरवपूर्ण 60 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर हीरक जयंती के उपलक्ष्य में महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका ''एकलव्य'' का प्रकाशन कर रहा है।

महाविद्यालय ने अपने उच्च शिक्षा आदर्शों एवं संस्कारों से 60 वर्षों की अवधि तक अनवरत विद्यार्थियों की प्रतिभाओं को निखारने का कार्य किया है। केवल गोविंदपुर अंचल ही नहीं वरन पूरे धनबाद जिले एवं अन्य राज्यों के विद्यार्थियों को भी ज्ञान के आलोक से यह महाविद्यालय प्रकाशित करता आया है। महाविद्यालय ने विद्यार्थियों के व्याक्तित्व को निखार कर उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए सदैव अभिप्रेरित किया है।

आशा है महाविद्यालय पत्रिका ''एकलव्य'' साहित्य प्रेमियों, शिक्षा एवं कला साधकों, रचनाधर्मियों की सृजनात्मक क्षमताओं को पल्लवित एवं पुष्पित करेगी।

इन्हीं पवित्र भावनाओं के साथ हार्दिक शुभेच्छा।

13/11/2021

(पशुपतिनाथ सिंह)

अनुग्रह नगर, धनसार, धनबाद (झारखण्ड) ● दूरभाष 0326-2307555

Dr. Pramod Pathak
Professor (retd.) IIT,ISM, Dhanbad
Member Higher Education Council
Jharkhand.

It gives me great pleasure to learn that RS More College, Dhanbad is celebrating its 60th year of existence. The college has come a long way from its humble beginnings in the remote area of Dhanbad. I have fond memories of this college which my late father Lallan Jee Pathak served as secretary of the governing council for a considerably long period and was instrumental in its development into constituent college of the University. It is a nostalgic occasion for me as I write this message. My involvement with this college in capacity invited member IQAC also gives me an obligatory role to contribute to the growth and development of this college which is doing a great service to the surrounding society and the community at large. Education is the only answer to all backwardness and the college is fulfilling this objective.The present year also happens to be the birth centenary year of my father whose contribution to the field of education and societal development of Dhanbad has been immense.I take this opportunity to wish the very best to the Principal Professor Pravin Singh and his entire team who are putting in great efforts to see this institution flourish and count among the best in the state. I will be happy to contribute in whatever way I can for the growth of this Institution.With best wishes

Pramod Pathak.

BINOD BIHARI MAHTO KOYALANCHAL UNIVERSITY

DHANBAD, JHARKHAND

Email : registrarbbmku@gmail.com

कमल जॉन लकड़ा (I A S)

शुभकामना संदेश

यह बेहद प्रसन्नता का विषय है कि आर. एस. मोर महाविद्यालय, गोविन्दपुर अपनी स्थापना के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में महाविद्यलय वार्षिक पत्रिका ''एकलव्य'' का प्रकाशन कर रहा है।

मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों का उचित मार्ग दर्शन कर उन्हें उचाई के नये आयाम छूने की दिशा में प्रशस्त करेगी। यह अपनी साहित्य सुधा से विद्यार्थियों में नवीन उत्साह एवं उर्जा का संचार करेगी।

महाविद्यालय द्वारा ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे समग्र प्रयासों की मैं सरहाना करता हूँ और महाविद्यालय परिवार को इस वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के लिए अनेकानेक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

कुलपति

R. S. MORE COLLEGE

GOVINDPUR, DHANBAD, JHARKHAND - 828109

GLIMPSES OF SOME ACTIVITIES / EVENTS

स्वच्छता पखवारा

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस

स्टार्टअप और रोजगार के अवसर विषय पर परिचर्चा

गोविंदपुर | प्रतिनिधि

आरएस मोर कॉलेज में बुधवार को स्टार्टअप और रोजगार के अवसर विषय पर कॉलेज के सभागार में परिचर्चा आयोजित की गई। परिचर्चा की शुरुआत करते हुए प्राचार्य डॉ. प्रवीण सिंह ने कहा कि स्टार्टअप देश को नया आयाम दे सकता है। आने वाले दिनों में स्टार्टअप इंडिया, देश के भविष्य के लिए स्टैंडअप इंडिया होगा।

धनबाद के आइकॉन स्टार्टअप मैनेजर सह सॉफ्टवेयर डेवलपर शान्तनु बनर्जी ने कहा कि छात्रों को स्टार्टअप के क्षेत्र में आगे आने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि स्टार्टअप में पूरी निष्ठा के साथ कड़ी मेहनत करें, तो सफलता जरूर मिलेगी। इंडसइंड बैंक, गोविंदपुर के मैनेजर शशांक ठाकुर ने कहा कि स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य देश में स्टार्टअप्स और नए विचारों के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है। जिससे देश का आर्थिक विकास हो एवं बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हों।

प्राध्यापक डॉ. अमित प्रसाद ने कहा कि स्टार्टअप की दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती (काम करने का तरीका) इसकी विघटन और विविधीकरण की क्षमता है। परिचर्चा में डॉ. रत्ना कुमार, डॉ. अजित कुमार बर्णवाल, डॉ. सूर्यनाथ सिंह, डॉ. कुहेली बनर्जी, डॉ. नीना कुमारी, प्रो. त्रिपुरारी कुमार, प्रो. प्रकाश कुमार प्रसाद, डॉ. विनोद एक्का, प्रो. सत्यनारायण गोराई, इकबाल अंसारी, राकेश ठाकुर, राजकुमार पाल, स्नेहलता होरो, मो. शाहिद, सुजीत मंडल, प्रदीप महतो एवं अन्य उपस्थित थे।

Appreciation Award for
One District One Green Champion Award 2020-21

प्राचार्य का संदेश

हमारे महाविद्यालय की पत्रिका एकलव्य के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के चहुंमुखी विकास की दृष्टि से शिक्षा के साथ-साथ खेल , साहित्य, एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश भी बेहद आवश्यक है। इन गतिविधियों का समावेश होने से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के पक्ष उद्घाटित एवं पल्लवित होते हैं। पठन-पाठन की दीर्घता की वजह से विद्यार्थियों में मौलिक लेखन का समुचित विकास नहीं हो पाता। उनमें उनकी प्रतिभा दबी रह जाती है। अतः यह हम सबका दायित्व है कि विद्यार्थियों की सुषुप्त मौलिक लेखन कला को जागृत करने का प्रयास किया जाए। इसी सुविचार का स्वप्न संजोकर महाविद्यालय परिवार ने इस पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है। मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय के विद्यार्थियों में इससे मौलिक लेखन की प्रतिभा में संवृद्धि होगी। इस नव लेखन से यह संस्थान निरन्तर उच्च शिक्षा के नए आयामों को हासिल करेगा।

इन्हीं मंगलकामनाओं सहित मैं पूरे संपादक मंडल को अनेक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। मुझे यह आशा भी है कि पत्रिका विद्यार्थियों ही नहीं अपितु सर्व पाठकों के लिए ज्ञानदायिनी सिद्ध होगी। मुझे यह भी विश्वास है कि महाविद्यालय इस प्रकार के पुनीत शैक्षिक कार्य पूर्ण मनोयोग से करता हुआ उत्तुंग शिखर पर सुशोभित रहेगा।

डॉ. प्रवीण सिंह

प्राचार्य

Editors' Desk

It is a matter of great pride and privilege for me being a part of college magazine. "Eklavya" provides a platform for every student to develop their learning skills. The main thrust of the college has been to achieve human excellence to shape the personality of pupils through a host of extracurricular and curricular activities, and instilling in them the moral values.

Our building talents have expressed their thoughts, idea, hopes, feeling and convication in a creative way. In fact, this is how they broaden their mental, psychological and intellectual horizons, thus the college magazine reflects how the college has been able to live up to its aim, providing quality education to the students.

I heartily thanks our college administration for putting faith on me for this creative work, Principal Dr. Pravin Singh who has guided us at every stage of making this college magazine, thanks to all the college member for their co-operation and support and putting in their best in bringing out this issue of our college magazine.

Good wishes and happy reading.

Dr. Amit Prasad
Asst. Professor
Deptt. Of Commerce
R.S.M.C. Govindpur

संपादक की कलम से

आर एस मोर कॉलेज, गोविंदपुर द्वारा प्रकाशित "एकलव्य" आप पाठकों को एक अतुलनीय, अलौकिक ,आदर्श एवं सतत ज्ञान दिग्दर्शित करने का प्रयास है। यह महाविद्यालय परिवार की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का दर्पण है।

वैश्विक महामारी के इस दौर में यह सकारात्मकता बिखेरने की सोच है। महाविद्यालय परिवार ने विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं गैर शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की सृजनात्मक दृष्टि को इस पत्रिका के माध्यम से परिलक्षित करने का प्रयास किया है।

आर एस मोर महाविद्यालय , गोविंदपुर द्वारा प्रकाशित "एकलव्य" सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के विचारों को गतिशीलता प्रदान करने का एक सुप्रयास है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार सूर्य की स्वर्णिम किरणें धरती के चरण को स्पर्श कर नई रोशनी का संचार करती है उसी प्रकार "एकलव्य" छात्रों में एक नई चेतना एवं जागृति प्रस्फुटित करेगा।

इस पत्रिका में महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की मौलिक कविताएं, रचनायें, शोध-आलेख एवं अन्य सृजनात्मक अभिव्यक्ति को चित्रित किया गया है।

"एकलव्य" पत्रिका का संपादन करते हुए मुझे गौरव की अनुभूति हो रही है। आशा करता हूँ यह पत्रिका हम सभी महाविद्यालय परिवार के लोगों में नई जागृति का संचार करेगा। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ महाविद्यालय पत्रिका "एकलव्य" का यह अंक सभी पाठकों को प्रस्तुत है।

त्रिपुरारी कुमार

सहायक प्राध्यापक

अर्थशास्त्र विभाग

From The Editor's Pen

Dear readers,

Happy monsoon! It is with immense pleasure that we introduce to you our new college magazine, 'Eklavya'. Though a long ongoing project, it could be officially introduced now, where our various contributors and staff members took their time off of their busy and troubled (nonetheless! Specially in the times of pandemic and lockdown) schedules and contributed their bit towards the magazine. Given the times that we are going through, specially the covid/lockdown period, it is really a challenge to keep oneself going. And, that is the perfect timing for creativity to pop up and step in, to keep us sane enough, to keep our souls alive. Kurt Vonnegut rightly said, " To practice any art, no matter how well or badly, is a way to make your soul grow. So do it. " With the same spirit we have tried our best to pour in our souls in this project. The first issue has contributions ranging from teachers, staff to students, giving a single platform for all of us to engage in creatively, like a family. We have articles ranging from science and technology to politics, and articles related to education and mental health, which are indeed crucial for any erudite institution and its students. We also have a whole range of poems from students with topics as varied as women empowerment, to education, to covid. We, thus, have a package of learning and fun, knowledge and creativity in the form of this magazine for all our readers, specially our students, wherein they cannot just broaden their area of knowledge, but contribute towards it too, leading to their overall development. We thoroughly enjoyed working through this and hope that you all thoroughly enjoy going through it. We promise and hope to come up with better things in the next issue. Till then do enjoy reading it. Any suggestions and remarks towards the improvement of this magazine is welcome. Happy reading! Do take care and stay safe, all of you.

Dr. Shabnam Parveen
Editor (English)

About, Vision And Mission	1
Achievements	2-3
Message From The Principal	4-9
College Members	10-14
Safarnama (Hindi Language) by Kashinath Sinha (Ex- Librarian)	15-17
Energy Scenario In India (English Language) by Dr. Rajendra Pratap	18-29
E-Commerce in Today's Scenario (English Language) by Dr. Shyam Kishore Singh	30-38
NSS Activities Year 2020	39-42
NSS Activities Year 2021	43-46
Committees	47-56
India-traveller Rabindranath (Bengali Language) by Dr. Ratna Kumar	57-58
Vilupt Hoti Bhartiya Sanskriti (Hindi Language) by Satya Narayan Gorain	59-60
Holi Nhi, Naya Saal Hai Bharat Ka (Hindi Language) by Dr. Awaneesh Maurya	61
Sports Activities	62
Cultural Activities	63-64
Prerak Vyaktitva- Netaji Subhash Chandra Bose (Hindi Language) by Binod Kumar Ekka	65-67
Gandhi : Satya Aur Prayog (Hindi Language) by Dr. Surya Nath Singh	68
Corona Virus : Mansik Tanaav Aur Akelapan (Hindi Language) by Prakash Prasad	69
News And Media	70-71
Meaning Of True Education (English Language) by Tripurari Kumar	72-73
Higher Education In India : Issues And Opportunities (English Language) by Dr. Amit Prasad	74-78
My First Day In College (English Poem) by Dr. Shabnam Parveen	79
Time Management: A Tool For Success (English Language) by Dr. Kuhali Banerjee	80-81
Buniyadi Sikhsha : Ek Vimash (Hindi Language) by Dr. Ajit Kumar Burnwal	82-85
Mental Health And It's Importance (English Language) by Ragini Sharma	86-88
Srinavasa Ramanujan by Iqbal Ansari	89
Gajal by Md. Sharique	90
Paryavaran asantulan badhti jansankhya ek mul karan By Shankar Ravidas	91-92

Article by the students	
Bachcho Ke Kaka Kalam (Hindi Poem) by Amit Mandal	93-94
Sikhsha Ka Mahatva (Hindi Poem) by Reema Dutta	95
Sikhsha Ka Gyan (Hindi Poem) by Saba Parveen	96
Sikhsha Ka Mahatva (Hindi Poem) by Mukesh Kumar Mahato	96
Kyun (Hindi Poem) by Nikita Kumari	97
Nari Shakti (Hindi Poem) by Manisha Kumari	98
Corona Par Kavita : Mujhse Daro Na (Hindi Poem) by Mili Kumari	99
Aaj Ki Ladkiya (Hindi Poem) by Mamta Burman	100
Chatra Shakti (Hindi Language) by Afroj Ansari	100
Climate Change (English Language) by Roshan Kumar Jha	101
Covid 19 Aur Hamara Paryavaran (Hindi Language)	102-103
Corona Ko Dur Bhagao (Hindi Poem) by Manisha Kumari	104
Shok Sandesh	105

ABOUT THE COLLEGE

Ram Sahai Mull More College is situated at Ratanpur Village under Govindpur Block of Dhanbad District. The college was established in 1959 with the prime aim of catering to the needs of higher education of the people belongings to SC, ST, Minorities and other backward sections of the society residing in and around Govindpur. R.S.More College, Govindpur is the second oldest college in Dhanbad district currently under Binod Bihari Mahato Koylanchal University, Dhanbad.

OUR MISSION

The College strives to achieve the following:

- To contribute to improve the quality of education and Advancement of knowledge through effective teaching and Learning process.
- To provide higher education for boys and girls by imparting Quality and socially relevant knowledge.
- To empower students by exploring their hidden potential through extra-curricular activities etc.
- To develop aptitude and skills of students to equip them to face the challenges and needs of a fast changing society.
- To give greater opportunity to students of weaker and socioeconomically backward strata of the society in order to prepare them to excel their knowledge and skills.

OUR VISION

Our vision is to promote and inculcate human values and sense of patriotism with imparting quality higher education and overall development of students. We aim at making our students good citizen with knowledge, skill and leadership quality to perform their duties efficiently in global perspective.

R.S. MORE COLLEGE, GOVINDPUR

Achievements

The RSMC fraternity is extremely grateful to each of its member who has contributed to its rich, proud heritage and legacy. We honor these individuals who have excelled in their endeavors and we are immensely proud of their success.

Listed below are our various achievements throughout the last three years.

"One District One Green Champion" Award 2020-21

"A 'green campus' and sustainability-oriented approach is a priority area for R.S. More College, Govindpur." We have received the prestigious 'One District One Green Champion' award conferred by the Mahatma Gandhi National Council of Rural Education (MGNCRE), Ministry of Education, for the district of Dhanbad. As a proud recipient of this 'swachhta' award, especially during Covid-19 times, the college reaffirms its commitment to sustainability and impactful environmental advocacy. The award is a testimony to our commitment towards rending social responsibility with utmost sincerity. The award is based on various parameters including hygiene, cleanliness, usage of green and renewable energy, waste management, green campus drive, besides observing post COVID-19 precautions and maintaining other social distancing norms. "We take pride in contributing our bit in making India clean and Atmanirbhar.

Placement Drive

Ministry of Higher and Technical Education, Jharkhand conducted Placement drive on 14th September 2018 in R.S. More College, Govindpur. The programme was coordinated by Principal Dr. Kiran Singh & started with warm welcome of Chief Guest Dr. Anil Kumar Mahato. Nearly 20 Companies were present in the Recruitment Drive. About 5000 students participated in the Drive. The aim of the event was to empower the students by receiving the ample opportunities to compete in the race and get placed in established Companies. This event was a grand success as the Company student interaction was at the greatest peak and huge numbers of students were selected.

National Seminar on Financial Inclusion

The Department of Commerce of R.S. More College, Govindpur successfully organized the two-day national seminar on Financial Inclusion and Rural Development in Collaboration with Bharti Publications, Delhi. Dr. Kiran Singh, Principal of the college explained the background of the seminar in his welcome address. The seminar was inaugurated by Dr. Anil Kumar Mahato, Pro-Vice Chancellor BBMKU. His inaugural address shed light on the Road map of Financial Inclusion and Rural Development.

Overall Fourth Rank in Youth Festival BBMKU 2018

R.S. More College, Govindpur actively participated in the First Youth Festival of BBMKU entitled "Antarnad" held in Dec 2018. We won various prizes in Poster Making, Cartooning, Collage, Installation, On-Spot Painting and were placed at fourth rank in the University.

Approval of SSR by NAAC 2020

Amid Peak of the Covid Pandemic R.S. More College submitted the SSR to the NAAC. Later it was evaluated and our SSR was approved by the agency. We are putting all the required efforts to obtain good grade from the NAAC on their Peer Team Visit.

First Webinar of BBMKU, Dhanbad

Despite being situated in the Rural Background R.S. More College organized the first online Webinar in the Binod Bihari Mahato Koyalanchal, Dhanbad on "Covid-19: Yoga, Immunity and Healthy Life Style". Honorable Vice-Chancellor of BBMKU Prof. (Dr.) Anjani Kumar Shrivstava was the chief Guest of Webinar.

Distribution of Mask and Soaps during Lockdown

The NSS unit of R.S. More college, Govindpur distributed soaps and Masks to laborers who were quarantined in the College during Lockdown 2020. Dr. Ratna Kumar, NSS coordinator played a pivotal role in distributing the Masks and Soaps.

International Webinar on "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की भूमिका"

R.S. More College, Govindpur organized an International Webinar on 06th Sep 2020 to discuss the role of teachers in current times of Covid. The former Governor of Goa Smt. Mridula Sinha, Dr. J.B. pandey and Honorable Vice-Chancellor of BBMKU attended the international Webinar.

Online Classes and Cultural Activities

Despite being situated in rural area and majority of students from rural Background R.S. More College, Govindpur under the able headship of Principal Dr. Pravin Singh has successfully conducted online classes and various cultural activities in online mode. Nearly fifty percent students have regularly joined online classes. Online examinations have also been held successfully during these tough times of Pandemic.

आर0 एस0 मोर कॉलेज के विकास की भावी रूपरेखा

डॉ प्रवीण सिंह

प्राचार्य

आर0 एस0 मोर कॉलेज , गोविंदपुर

धनबाद के शहरी क्षेत्र से दूर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन- जाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग बहुल ग्रामीण क्षेत्र गोविंदपुर में उच्चतर शिक्षा प्रसार के सुउद्देश्य से आर0 एस0 मोर कॉलेज गोविंदपुर की स्थापना 1959 में की गयी थी । □सा विद्या या विमुक्तये□ के आदर्श से संस्थापित इस महाविद्यालय को पुराने बिहार विश्वविद्यालय पटना से 1 जून 1960 से औपचारिक संबंधन उपलब्ध हो गया। अपनी गौरवशाली परम्परा को निभाते हुए महाविद्यालय ने अपनी स्थापना के 62 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। ग्रामीण क्षेत्र में अवस्थित इस महाविद्यालय ने निश्चय ही समावेशी शिक्षा के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। और हमें अंत्योदय के इसी संकल्प के साथ निरन्तर शिक्षा रूपी प्रकाश पुंज को ज्वलित रखते हुए प्रशस्त होना है। आधुनिक समय में हो रहे शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तनों के अनुरूप इस महाविद्यालय को बदलाव के लिए तैयार करना है।

अपनी स्थापना के उपरांत से ही इस महाविद्यालय ने उच्च शिक्षा की ज्योति के प्रसार में बहुआयामी सफलता दर्ज की है। आस पास की ग्रामीण युवा आबादी को सक्षम बनाने का कटिबद्ध प्रयास यहाँ के शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मचारियों द्वारा सदैव किया गया है। अपनी सुव्यवस्थित, सुगठित, सुविचारित उत्कृष्ट अध्ययन-अध्यापन पद्धति के लिए महाविद्यालय सदैव विख्यात रहा है साथ ही यह निरन्तर विविध गतिविधियों का भी साक्षी बनता रहा है। इस प्रकार महाविद्यालय ने विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास का कुशल प्रयास हर स्तर पर किया है।

ज्ञान एवं वैविध्य की इसी गंगा को अविरल रूप से जारी रखने के लिए हमने छात्र-छात्राओं एवं महाविद्यालय के हित में कई कार्य योजनाएं तैयार कर उसका क्रियान्वयन करना प्रारम्भ कर दिया है। इसके अंतर्गत कुछ प्रमुख बिन्दु निम्नवत हैं।

1 महाविद्यालय के राज्य स्तर पर प्रचार प्रसार के लिए एक लघु वीडियो का निर्माण
2 महाविद्यालय निर्देशिका का नए रूप में निर्माण
3 सभी कक्षाओं को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपकरणों से जोड़ना
4 महाविद्यालय सभागार को पूर्णतः: आधुनिक रूप से अद्यतन करना
5 महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ एवं हरित रखना
6 वर्ष भर की शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक उपलब्धियों के संकलन के लिए महाविद्यालय पत्रिका का विमोचन
7 सुरक्षा की दृष्टि से बेहतर गुणवत्ता के कैमरों को सभी कक्षाओं एवं अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर लगाना
8 महाविद्यालय पुस्तकालय को समृद्ध करना
9 महाविद्यालय परिसर में स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण
10 महाविद्यालय कंप्यूटर लैब को अत्याधुनिक बनाना
11 छात्रों को बेहतर प्लेसमेंट के अवसर उपलब्ध कराना
12 महाविद्यालय को डिजिटल माध्यम से सम्पूर्ण रूप से जोड़ना
13 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के केंद्र की महाविद्यालय में स्थापना
14 छात्र-छात्राओं के कौशल निर्माण के कार्यक्रमों का आयोजन
15 आईआईटी एवं इसी तरह की अन्य संस्थाओं से करार
16 महाविद्यालय में लैंग्वेज लैब की स्थापना
17 छात्र-छात्राओं के बेहतर कॅरियर निर्माण के लिए स्टार्ट अप केन्द्र की स्थापना
18 रोजगारपरक विषयों को ऐड-ऑन कोर्सेज में सम्मिलित करना
19 महाविद्यालय में इनक्यूबेशन केन्द्र की स्थापना

20 स्नातकोत्तर विषयों की पढ़ाई महाविद्यालय में शुरू करने का प्रयास
21 ग्रामीण सुदूरवर्ती छात्रों के लिए छात्रावास का विस्तार
22 खेल विकास एवं प्रोत्साहन कमिटी का गठन
23 कक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरुस्कार
24 महाविद्यालय सांस्कृतिक क्लब की स्थापना
25 छात्राओं के लिए सेनेटरी नेपकिन वैडिंन मशीन की व्यवस्था
26 भूतपूर्व छात्र-छात्राओं को महाविद्यालय के विकास की प्रक्रिया का हिस्सा बनाना
27 सुयोग्य शिक्षाविदों के सहयोग से आधुनिक शिक्षण पद्धति का सम्पूर्ण विकास
28 प्रयोगशालाओं को आधुनिक रूप में सुसज्जित करना
29 महाविद्यालय साहित्य परिषद की स्थापना
30 नवोन्मेष पर विशेष बल
31 महाविद्यालय बुक-बैंक की स्थापना
32 राष्ट्रीय सेवा योजना की दूसरी इकाई का गठन
33 नेशनल कैडेट कोर का पुनर्स्थापन
34 छात्रों के पाठ्य सामग्री के लिए ई लाइब्रेरी का निर्माण
35 शिक्षक-अभिभावक संवाद समिति की स्थापना
36 राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के सेमिनार का आयोजन
37 छात्र संसद का निर्माण
38 प्रबुद्ध विद्वानों के द्वारा व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन
39 सामुदायिक विकास कार्यक्रमों का आयोजन
40 आपदा प्रबंधन समिति का गठन
41 कॉलेज वेबसाइट को डायनामिक बनाना
42 महाविद्यालय अकादमिक कैलंडर का निर्माण
43 तकनीक सहयोग समिति का गठन
44 दिव्यांग छात्रों के समस्याओं के निपटान हेतु समिति गठन

45 महाविद्यालय कैंटीन का निर्माण

46 शिक्षकों को फैकल्टी डेवेलपमेंट प्रोग्राम में निबंधन के लिए प्रोत्साहन

47 स्वयं प्रभा सुसज्जित क्लास रूम का निर्माण

48 मानव अधिकार एवं कर्तव्यों से जुड़े विषयों पर कैंपेन

49 शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के लिए कंप्यूटर प्रशिक्षण का आयोजन

50 बालकों के लिए अलग कॉमन रूम का निर्माण

इस प्रकार की कार्य योजनाओं को मूर्त रूप देकर महाविद्यालय को उच्च शिक्षा का दैदिव्यमान नक्षत्र बनाने का समर्पित प्रयास किया जाएगा। महाविद्यालय में ढांचा गत एवं आधारभूत सुविधाओं का विकास कर छात्रों को और बेहतर गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने का प्रयास इसी में सम्मिलित है।

अध्ययन अध्यापन और अनुशासन की त्रयी हमारे महाविद्यालय की परंपरा है। सीमित संसाधनों के मध्य चल रहे महाविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन संबंधित सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। समस्त विद्वान शिक्षक छात्रों की समस्त चिंतन अभीप्सा को संतुष्ट करने हेतु कृत संकल्पित हैं साथ ही प्रशासन सीमित संसाधनों के मध्य भी सभी आवश्यक सुविधाओं को सुरुचिपूर्ण स्तर तक उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। छात्रों की जनतांत्रिक भावनाओं के प्रति भी महाविद्यालय परिवार संवेदनशील है । इस निमित्त महाविद्यालय में प्रतिभाशाली छात्रों को समाहित कर एक "छात्र कल्याण समिति" का गठन भी जल्द किया जाएगा। मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि उपरोक्त कदमों का अक्षरशः पालन कर हम इस महाविद्यालय को झारखंड का अग्रणी महाविद्यालय बना सकते हैं। मुझे यह भी अपेक्षा है कि छात्र अध्ययन को अपना मूलमंत्र मानकर अपनी उच्च शिक्षा पूर्ण करेंगे और समाज में अपनी सार्थकता सिद्ध करते हुए महाविद्यालय के नाम को भी सार्थक करेंगे।

ग्रामीण क्षेत्र में अवस्थित होने के बावजूद महाविद्यालय परिवार के शिक्षकों एवं छात्रों के प्रबल सहयोग से ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन पिछले वर्ष से ही सुचारु

रूप से जारी है। ऑनलाइन लाइव कक्षाओं के साथ- साथ गुणवत्ता पूर्ण पाठ्य सामग्री भी छात्रों को उनके विषय शिक्षकों द्वारा उपलब्ध कराई जा रही है।आंतरिक परीक्षाओं का आयोजन भी ऑनलाइन माध्यम से सफलतापूर्वक किया जा रहा है। कोरोना से उत्पन्न परिस्थितियों को देखते हुए मनोविज्ञान विभाग द्वारा छात्रों की काउंसेलिंग की व्यवस्था भी की गई है। इतिहास, अर्थशास्त्र , वाणिज्य एवं अन्य विभागों ने भी ऑनलाइन क्विज, निबंध प्रतियोगिता, संगीत प्रतियोगिता ,पेंटिंग आदि का आयोजन नियमित रूप से किया है। इतना ही नहीं आर0 एस0 मोर महाविद्यालय ने बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले महाविद्यालयों में सर्वप्रथम वेबिनार का आयोजन सफलतापूर्वक किया है। विभिन्न अवसरों पर महाविद्यालय द्वारा लगातार ऑनलाइन वेबिनार, गोष्ठी, कॉन्फ्रेंस एवं वर्कशॉप आयोजित किये जाते रहे हैं।कोविड-19से बचाव के प्रति जागरूकता लाने के लिए महाविद्यालय द्वारा "कोविड-19: योग, इम्युनिटी एवं हेल्दी लाइफस्टाइल" विषयक वेबिनार का आयोजन, नई शिक्षा नीति से सम्बद्ध "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की भूमिका:नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में" विषयक अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन, विश्व जल निगरानी दिवस पर "जल संरक्षण एवं इसकी प्रासंगिकता" विषयक वेबिनार का आयोजन इनमें से कुछ प्रमुख वेबिनार हैं। ये आयोजन हमारे शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के असीम समर्पण एवं सहयोग के कारण ही सम्भव हुए हैं।

आर0 एस0 मोर महाविद्यालय परिवार के लिए यह बेहद गर्व का विषय है कि हाल ही में महाविद्यालय को भारत सरकार की उच्च शिक्षा विभाग की इकाई महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद के द्वारा "वन डिस्ट्रिक्ट वन चैंपियन" अवार्ड स्वच्छता एवं नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए दिया गया है। पूरे देश के मात्र 400 एवं झारखंड के केवल 5 उच्च शिक्षा संस्थानों को इस अवार्ड से नवाजा गया है जिसमें हमारा महाविद्यालय भी एक है। यह हमारे महाविद्यालय के सुनहरे भविष्य की आहट भर है। मुझे पूरा यकीन है कि हमारा महाविद्यालय आने वाले दिनों में सभी के सहयोग से नई ऊंचाइयों के शिखर पर

होगा। मैं पूरे महाविद्यालय परिवार को इस स्वर्णिम सफलता के लिए बधाई प्रेषित करता हूँ।

प्राचार्य का पद बेहद गरिमामय एवं दायित्वों से युक्त है और शिक्षण, शोध एवं सृजनात्मक गतिविधियों की उत्कृष्टता मेरी प्राथमिकता है। परंतु यह कार्य टीम भावना से ही संभव है। मैं यथासंभव इस महाविद्यालय को उच्चतम शिखर पर ले जाने का प्रयास करता रहूँगा। मुझे अत्यंत ख़ुशी है कि इतने विद्वान एवं ऊर्जावान शिक्षक साथियों एवं कुशल शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का सहयोग मुझे निरन्तर प्राप्त हो रहा है। महाविद्यालय परिवार के सहयोग से ही नैक मूल्यांकन के पहले एवं महत्वपूर्ण पड़ाव को हमने सफलतापूर्वक पार कर लिया है। मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि विश्वास है कि सभी के कोटिशः सहयोग से महाविद्यालय को शीघ्र ही नैक की ए श्रेणी का बनाया जाएगा एवं नैक मूल्यांकन में हमें आशातीत सफलता हासिल होगी।

"गहन सघन मनमोहक वन तरु, मुझको आज बुलाते हैं,

किन्तु किये जो वादे मैने याद मुझे आ जाते हैं

अभी कहाँ आराम बदा, यह मूक निमंत्रण छलना है

अरे अभी तो मीलों मुझको, मीलों मुझको चलना है!!"

उम्मीद है हरिवंश राय बच्चन की इन पंक्तियों को चरितार्थ कर हम निरन्तर महाविद्यालय को विकास पथ पर अग्रसारित करते रहेंगे।।

TEACHING STAFFS

DR. PRAVIN SINGH
PRINCIPAL

DR. RAJENDRA PRATAP
PHYSICS

DR. RATNA KUMAR
BENGALI

SUBHASH CHANDRA DAN
ZOOLOGY

MANORANJAN MAHATO
PHYSICS

DR. SHYAM KISHOR SINGH
COMMERCE

DR. AMIT PRASAD
COMMERCE

TRIPURARI KUMAR
ECONOMICS

SATYA NARAYAN GORAIN
HISTORY

TEACHING STAFFS

DR. SHABNAM PARVEEN
ENGLISH

DR. SHUVRA PRADHAN
CHEMISTRY

AVANEESH MAURYA
POLITICAL SCIENCE

DR. KUHALI BANERJEE
COMMERCE

DR. NEENA KUMARI
PSYCHOLOGY

PRAKASH KUMAR PRASAD
PSYCHOLOGY

SURYA NATH SINGH
HINDI

VINOD KUMAR EKKA
HINDI

DR. AJIT BARNWAL
PHILOSOPHY

NON TEACHING STAFFS

MD. SHARIQUE
H. ASST.

PRADIP KUMAR MAHTO
ASST.

RATAN TOPPO
S. K. / SORTER

ETWA TOPPO
TYPIST

SHANKAR RABIDAS
MECH.

SHIV NARAYAN CHOUDHARY
STENO

MANOJ TIRKEY
S. K.

SUJIT KUMAR MANDAL
R/C

DIPAK KUMAR MISHRA
R/C

NON TEACHING STAFFS

DHANESHWAR RAM

SORTER

ANIL KUMAR

TYPIST

MATHUR CHANDRA MAHATO

LDC

DAYAMAY KUMAR MANDAL

3RD GRADE

NIMAY MANDAL

3RD GRADE.

ANAND PRAKASH

R/C

SANTOSH KUMAR SUMAN

PEON

LALAN KUMAR

PEON

BIKASH KUMAR

PEON

MD. ATTAUL ANSARI

PEON

INTERMEDIATE SECTION

RAGIINI SHARMA
ENGLISH

SNEHLATA HORO
COMMERCE

IQBAL ANSARI
MATHS

PUJA KUMARI
GEOGRAPHY

RAKESH KUMAR THAKUR
POLITICAL SCIENCE

SOMNATH PRASAD
COMPUTER OPERATOR

UJJWAL MODAK
COMPUTER OPERATOR

RANJAN KUMAR
COMPUTER OPERATOR

ALAKH NARAYAN
COMPUTER OPERATOR

आर. एस. मोर कॉलेज एकसठ वर्ष का सफरनामा

रचयिता – काशीनाथ सिन्हा (पूर्व पुस्तकाध्यक्ष, आर. एस. मोर कॉलेज)

वर्ष 1958 तक धनबाद जिले में प्लेन एजुकेशन के सिर्फ दौ कॉलेज थे । आर. एस. पी. कॉलेज , झरिया और एस. एस. एल. एन. टी. महाविद्यालय, धनबाद । तब शहरी कोलाहल से दूर शांत ग्रामीण परिवेश में कॉलेज कि परिकल्पना करना दिवा स्वपन तो था ही, साहस और जोखिम भरा कदम भी था, जिसे साकार बनाया मधुबनी के क्रन्तिकारी योध्दा और गोसाईंडीह कस्तूरबा गाँधी आश्रम के सर संचालक श्री महावीर प्रसाद महतो ने । महावीर बाबु कहा करते थे – धनबाद और झरिया में शहरी बच्चो के लिए कॉलेज हैं । यह कॉलेज मैंने गोविंदपुर, टुंडी के आदिवासी, हरिजन और आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगो के बच्चो के पढने के लिए बनाया हैं । आज़ादी कि लडाई हमने जिस उत्साह से लड़ी हैं , कॉलेज का नव निर्माण भी उसी उत्साह और उमंग से किया हैं । 'आवाज ' के संपादक ब्रह्मदेव सिंह शर्मा के साहस का उल्लेख करना यहाँ प्रासंगिक होगा । वर्ष 1947 में 'आवाज' पत्र का प्रवेशांक साईकिल पर बांधकर घर–घर पहुंचाते हुए शर्मा जी को देखकर हीरापुर बंगाली मोहल्ले के लोग कहते – ' मास्टर पागल हयेछे , हिंदी ते पत्रिका बार कोरछे ।' (मास्टर पगला गया हैं, हिंदी में अखबार निकलता हैं ।) महावीर बाबु को भी कॉलेज के निर्माण के लिए भिक्षाटन करते देखकर लोग कुछ इसी प्रकार से टीका–टिप्पणी करते थे । भिक्षाटन के इसी क्रम में महावीर बाबु कलकत्ता के सेठ रामसहाय मल मोर ट्रस्ट के ट्रस्टी और उनके सुपुत्र श्री विश्वनाथ मोर से मिले । विश्वनाथ मोर ने प्रस्ताव रखा– कॉलेज का निर्माण मेरे पिताजी के नाम पर हो तो मै आर्थिक सहायता दूंगा । महावीर बाबु को भला इसमे क्या आपत्ति हो सकती थी । कॉलेज उनके पिताजी के नाम पर आर. एस. मोर के नाम से पंजीकृत हुआ और विश्वनाथ मोर ने एकमुश्त पचास हजार (50000) की अनुदान और कुछ फर्नीचर , टाइपराइटर, और कुछ किताबे प्रदान कर कॉलेज का प्राथमिक भार वहन किया । यह वर्ष 1959 ई. के जून–जुलाई का माह था ।

11 सितम्बर 1959 ई. से गोविंदपुर हाई स्कूल के भवन में कला में इंटर और स्नातक प्रथम खण्ड कि पढाई प्रारंभ कर दी गयी । कॉलेज के प्रथम प्रिंसिपल बने श्री एस. पी. सिन्हा । कुछ साल तक कॉलेज गोविंदपुर हाई स्कूल के भवन में ही चलता रहा । पर यह कोई शाश्वत समाधान थोड़े ही था । महावीर बाबु अनवरत इस दिशा में प्रयत्नशील थे । मौजा रतनपुर में जी. टी. रोड के किनारे एक बड़ा भूखण्ड था वो किसी एक व्यक्ति का न होकर इजमाल की प्रॉपर्टी थी । महावीर बाबु के अथक प्रयास और समझाने–बुझाने पर कुरची, रतनपुर के उदार ग्रामीणों ने अपनी जमीन कॉलेज के लिए दान में लिख दी । एक घटना है जिसे लिखना मै अपना फर्ज समझता हूँ । कुरची के सिद्धेश्वर महतो की माँ अपने हिस्से की जमीन रजिस्ट्री करने धनबाद गयी थी । रजिस्ट्री हो जाने के उपरांत महावीर बाबु ने उससे खाने को पूछा तो वह खोटटा में बोली – ' हमे नाई खाबो । बेटी बिहा उपहास रही के केरोक । उपहास रही के जमीन दान केरोक । यदि खाई लेबो तो दान दिए न हेबोक ।' (मैं खाउंगी नहीं । (कन्यादान उपवास

रहकर किया जाता हैं । उसी प्रकार भूमिदान भी हैं । अगर मैं खा लुंगी तो दान देने का महत्व नही रह जायेगा ।) फिर तो महावीर बाबु ने पीछे मुड़कर नही देखा । 'हम तो चले थे अकेले , लोग आते गये और कारवां बनता गया ।' वर्ष 1964 ई. में कॉलेज के आधारशिला राखी गयी । के. बोरा एंड कंपनी के मालिक थे यशवंत बोस । इनकी आर्थिक मदद से कॉलेज का टीना शेड जो वर्तवान में कक्ष 4, 5, 6 यानी पुराना कॉमन रूम हैं , का निर्माण हुआ । बलियापुर के विनोद बिहारी महतो , गोविंदपुर का दुदानी परिवार तथा ज्ञात–अज्ञात अनेक दान दाताओ का अंशदान लगा हैं इस कॉलेज में ।

शिक्षको की बात करे तो इसके पूर्व नेतरहाट स्कूल की बात याद आ जाती हैं । वर्ष 1954 ई. में जब नेतरहाट की स्थापना हुई थी तो देश के चुने हुए 30 शिक्षक अध्यापन के लिए आये थे । सभी एक से एक दिग्गज अपने–अपने विषय के प्रकाण्ड पंडित । तब उनसे एक महीने तक नेतरहाट में रहने को कहा गया, ताकि वे वहाँ परिस्थति के अनुकूल अपने को ढाल लें । ध्यातव्य है कि जब नेतरहाट में शिक्षक को खुद अपना भोजन अपने बनाना पड़ता था , पानी भी डैम से स्वयं लाना पड़ता था और शौचालय भी साफ़ करना पड़ता था । ठण्ड और जंगली जीव– जन्तुओ का खतरा बना रहता था सो अलग से । एक महिना पूरते–पूरते 20 शिक्षक तो नेतरहाट को प्रणाम कर वहाँ से रुखसत हो गये । बच गये मात्र दस । और इन दस शिक्षको से ही प्रारंभ हुआ नेतरहाट । आर. एस. मोर. कॉलेज में ऐसे तो अनगिनत शिक्षक आये और गए । पर 1973 ई. तक आते–आते बच गए सिर्फ दस । सर्वश्री प्रो. एस. एन. राणा, नन्दकिशोर प्र. सिन्हा, आर. पी. वर्मा, नर्ववेश्वर प्र. सिन्हा, केदार झा , मो. हसामुद्दीन खां , बी. के. सिन्हा, के. एन. राणा, डी. डी. मांझी और प्रो. इम्तियाज अहमद कमर । कहना नही होगा कि यहाँ के इन दसो शिक्षको में भी साथ–साथ चलने की वही टीम भावना थी जो नेतरहाट के शिक्षको में थी । प्रिंसिपल डी.डी. आर. भाटिया, पूरा नाम दिलबाग राम भाटिया जिन्हें लोग प्यार से डियर भाटिया कहा करते थे, 'दिल' उपनाम से शायरी किया करते थे । प्रो. आर. पी. वर्मा ने हाई स्कूल के कुछ शिक्षको के मिलाकर 'नीहारिका' नाम से एक संस्था बना रखी थी । बेसिक स्कूल में इनकी बैठक हुआ करती थी । जिसमे कविता पाठ, शेरो–शायरी आदि हुआ करते थे । इसमें डी. डी. आर. भाटिया और प्रो. इम्तियाज अहमर कमर रौनक अफरोज होते और शिरकत करते । गोविन्दपुर में हिन्दी साहित्य के प्रसार–प्रचार का यह प्रथम दौर था । आर. एस. मोर. कॉलेज के शिक्षको को श्रेय जाता हैं कि वे यहाँ की बंगाली जनता को हिन्दी बोलना–पढनादृलिखना सिखाये ।

स्थापना काल के 18 वर्ष बाद, वर्ष 1977 ई. के अप्रैल माह से आर. एस. मोर कॉलेज रांची विश्वविद्यालय की अंगीभूत इकाई के रूप में उभरकर सामने आया । यु. जी. सी. बिहार सरकार तथा विश्वविद्यालय की सहायता से कॉलेज का चतुमुर्ख विकास हुआ । इसका श्रेय निश्चित रूप से तत्कालीन प्राचार्य डॉ. एस. एन. राणा को जाता है । कला के साथ वाणिज्य की पढाई तो पूर्व से होती ही रही थी , वर्ष 1979 ई. से विज्ञान की पढाई प्रारंभ कर दी गयी । कॉलेज पुस्तकालय का आकर बढ़ा । वर्ष 1976 ई. में पुस्तकालय में मात्र तीन हजार पुस्तकें थी, जो आज बढ़कर अडतीस हजार हो गयी हैं ।

किसी भी शिक्षण संस्थान का मापदंड उसका भवन या उपस्कर नही , उसकी गुणवत्ता और उपलब्धि होती हैं । हर्ष और उल्लास की बात हैं कि कसौटी के इस मापदंड पर आर. एस. मोर कॉलेज खरा उतरा हैं । इस कॉलेज से निकले अनेक छात्र डॉक्टर, इंजीनीयर, वकील, शिक्षक, व्यवसायी , पत्रकार तथा प्रशासनिक पदाधिकारी इसके पुख्ता प्रमाण हैं । छात्र ही नही , इस कॉलेज के शिक्षक भी प्रोन्नति पाकर विश्वविद्यालय प्रोफेसर बने हैं, किसी कॉलेज के प्राचार्य बने हैं, वाइस चांसलर बने हैं , या फिर सरकारी की दूसरी सेवाओ में गये हैं । शिक्षण के अतिरिक्त बच्चो के शारीरिक विकास और उनमे आत्म सम्मान भरने के लिए खेल स्पर्धा का आयोजन यहाँ बराबर होता रहा हैं । मुस्लिम समुदाय में उच्च शिक्षा के प्रति सम्मान बढ़ा हैं । वे मोहतरमा जो कभी पर्दे में रहा करती थी , नकाब के बाहर आ गयी हैं । देश के विकास के लिए यह एक शुभ संकेत हैं ।

वर्ष 2020 ई. में जब इस कॉलेज को देखता हूँ तो बहुत कुछ बदल गया हैं, ऐसा आभास होता हैं । कहा जाता हैं समय के साथ बहुत कुछ बदल जाता हैं । पर भला यह बदलाव कैसा जिसमे आदमी कि अस्मिता ही बदल जाए । छात्र और शिक्षक में पहले वाली वो निकटता नहीं रही । उनमे दूरी बढ़ गयी हैं । इसके लिए दोनों एक दुसरे को दोषी ठहराते हैं । आर. एस. मोर कॉलेज पचास साल पार कर चुका हैं । हमारे लिए यह खुशी और चुनौती भरा वर्ष हैं । आइये ! हम अपने अन्दर कुछ सकारात्मक सोच लायें ।

वर्तमान प्राचार्य डॉ. प्रवीन सिंह का मैं स्वागत करता हूँ और उनके विचारार्थ कुछ बाते रखता हूँ :–

1 आर. एस. मोर का अपना ग्राउंड हैं । इसका उपयोग खेल आयोजन के अलावा पुस्तक मेला , प्रदर्शनी और जनहित में जारी यात्रा , नाटक , अथवा कोई भी सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए किया जा सकता हैं ।

2 स्वपोषित वित्त योजना के तहत शॉर्ट टर्म वोकेशनल कोर्स – विजुअल आर्ट, आर्किटेक्चर , इंटीरियर डेकोरेशन, इलेक्ट्रॉनिक्स , वेब जर्नलिज्म ,फैशन डिजाइनिंग , मोबाइल रिपेयरिंग , ट्रेवल एंड टूरिज्म, बेसिक कंप्यूटर ट्रेनिंग आदि को चलाया जा सकता हैं ।

3 वर्षो से बंद हो गये एम. कॉम. को फिर से चलाया जा सकता हैं ।

4 कॉलेज का भवन रात्री में खली पड़ा रहता हैं । आयुर्वेद , होमियोपैथी, बी. एड. , लॉ अथवा इस तरह का कोई अन्य कोर्स सांध्यकालीन बेला में चलाया जा सकता हैं ।

5 कॉलेज परिसर में कैंटीन तथा फोटो कॉपी की दुकान लगायी जा सकती हैं ।

Energy Scenario in India

By Dr. Rajendra Pratap, H.O.D. Physics, R.S. More College, Govindpur, Dhanbad (A constituent unit of B.B.M.K University, Dhanbad)

Keywords: Fossil Fuel, Renewable Energy, Waste management, Power generation

Nomenclature

TW-hr	Terawatt hour
GWh	Gigawatt hour
LPG	Liquified Natural Gas
MW	Mega watt
GW	Giga watt
kWh	kilowatt hour
IREDA	Indian Renewable Energy Development Agency
Bio-CNG	Biogas Compressed Natural Gas
MSW	Municipal solid waste

Electricity generation

The electricity growth rate in India since 1985 was 179 TW-hr and in 2012 it increased to 1,057 TW-hr. The increase in electricity growth is mainly from coal-based plants and renewable energy sources during 2012-2017. The gross utility electricity production was 1,372 billion kWh in 2018-19, which represent 5.53% annual increment compared to 2017-2018. The contribution of renewable energy is more than 50% in electricity production during 2018-19.

Table 1. Yearly gross electricity generation by source (GWh) [1].

	Fossil fuel											
Year	coal	oil	gas	Nuclear	Hydro	Sub total	Mini hydro	solar	wind	biomass	other	Sub total
2011-12	612,497	2,649	93,281	32,286	130,511	871,224	NA	NA	NA	NA	NA	51,226
2012-13	691,341	2,449	66,664	32,866	113,720	907,040	NA	NA	NA	NA	NA	57,449
2013-14	746,087	1,868	44,522	34,228	134,847	961,552	NA	3,350	NA	NA	NA	59,615
2014-15	835,838	1,407	41,075	36,102	129,244	1,043,666	8,060	4,600	28,214	14,944	414	61,780
2015-16	896,260	406	47,122	37,413	121,377	1,102,578	8,355	7,450	28,604	16,681	269	65,781
2016-17	944,861	275	49,094	37,916	122,313	1,154,523	7,673	12,086	46,011	14,159	213	81,869
2017-18	986,591	386	50,208	38,346	126,123	1,201,653	5,056	25,871	52,666	15,252	358	101,839
2018-19	1,021,997	129	49,886	37,706	135,040	1,244,758	8,703	39,268	62,036	16,325	425	126,757

Non-Renewable Energy

Coal

India's 80% of total electricity generation is mainly from coal. In 2017, India was on 4th rank in coal production. According to greenpeace, Jharia is the largest coal mine in India which was taken by Bharat coking Coal Limited (BCCL) [2].

Oil

India globally ranked on top three in crude oil consumption with 221 Mt which shares

4.8% of the world. India is in third rank worldwide in net crude oil importer of 188 Mt by 2017. The crude oil refinery capacity in India was 4.972 million barrels per day which is 5.1% of the world in 2017.

LPG

The total LPG was consumed approx. 10.937 million tons in domestic sector for 6 months (April to September) in 2019. Around 274 million domestic connections (five people for one connection) with circulation of around 400 million LPG cylinders along with long pipeline with net aggregate length of 200,000 km which resembles more than the length of total railway track design in India. In India most of the LPG demand is imported making us the second largest consumer of LPG globally [3].

Renewable Energy

India produces largest renewable energy from renewable resources. In 2019, renewable energy contribution was 35% of total electricity generation in India

and 17% of total electricity in the world. India is administrating one of the biggest and most demanding renewable capacity development programs in the world. During UN climate summit which was held in 2019, India declared that the increment in renewable energy target was from 175GW to 450GW of renewable energy by the year 2022 [4].

Hydro power

The hydropower is hydroelectric power, which produces electricity through water. India ranks 7th in hydroelectric power production (having capacity more than 25 MW) in the world. The hydroelectric capacity of 44,594 MW was installed in India on 30th April 2017. The smaller hydroelectric power (up to 25 MW capacity) that has been installed is of 4,380 MW [5].

Wind energy

Wind energy is produced through machines that use their power source as wind. The wind power energy originated in India during 1990s. India ranks 4th in the world in wind energy installation. The total wind energy installed all over India till 30th June 2018 was 34,293 MW, mainly extended across Tamil Nadu, Maharashtra, Gujarat, Rajasthan, Karnataka, Andhra Pradesh and Madhya Pradesh with capacity of 7269.50 MW, 4100.40, 3454.30 MW,2784.90 MW, 2318.20 MW, 746.20 MW and 423.40 MW, respectively, India being the producer of 10% of the total power capacity produced. India has set a target to achieve 60,000 MW of wind energy by 2022. The government of India and Ministry of Renewable

Energy declared a hybrid policy of wind and solar energy in May 2018. In this policy, it was advised that the same land area will be used for both wind farms and solar panels.

Table 2. Installed Wind Energy in India [6].

Number	Wind farm	Producer	State	Current Capacity (MW)
1.	Muppandal wind farm	Muppandal wind	Tamil Nadu	1,500
2.	Jaisalmer wind park	Suzlon Energy	Rajasthan	1,275
3.	Brahmanvel windfarm	Parakh Agro Industries	Maharashtra	528
4.	Dhalgaon windfarm	Gadre Marine Exports	Maharashtra	278
5.	Chakala windfarm	Suzlon Energy	Maharashtra	217
6.	Vankusawade wind park	Suzlon Energy	Maharashtra	189
7.	Vaspet windfarm	ReNew Power	Maharashtra	144

Solar Energy

Solar energy is obtained from the sun's radiation. Solar energy is emerging very widely in India. The total solar energy installed was of capacity 34.404 GW on 29 February 2020. The government of India has announced the goal of producing 20 GW solar power capacity by 2022. This target was achieved 4 years ahead of the target year, later the target was increased to achieve 100 GW by 2022.

India raised its solar production capacity from 2,650 MW on 26 May 2014 to 20 GW on 31 January 2018. The current price of solar electricity is 18% less than the average price of its coal-fired counterpart. Solar energy helped in fulfilling the needs of energy in the rural sector by distribution of one million solar lanterns which replaced the need of kerosene and 1.4 million solar cookers along with 118,700 solar home lighting and 46,655 solar street lighting, which were installed under a national program by the end of September 2015, throughout India. India being a country with sunny climate, with nearly 300 clear and sunny days in a year, India's land area can achieve solar energy of around 5000 trillion kWh every year. Normally, a solar power plant has a daily average power generation of 0.20 kWh / m2 of area. The table below shows the solar energy production in different states of India.

Table 3. Solar power installed in different states of India [7].

State	31 March 2015	31 March 2016	31 March 2017	31 March 2019
	Current Capacity (MW)			
Rajasthan	942.10	1269.93	1812.93	3226.79
Punjab	185.27	405.06	793.95	905.62
Uttar Pradesh	71.26	143.50	336.73	960.10
Uttarakhand	5.00	41.15	233.49	306.75
Haryana	12.80	15.39	81.40	224.52
Delhi	5.47	14.28	40.27	126.89
Jammu and Kashmir	0.00	1.36	1.36	14.83
Chandigarh	4.50	6.81	17.32	34.71
Himachal Pradesh	0.0	0.73	0.73	22.68

Total Northern Region			**3318.18**	**6102.05 (21.43%)**
Gujrat	1000.05	1119.17	1249.37	2440.13
Maharashtra	360.75	385.76	452.37	1633.54
Chhattisgarh	7.60	93.58	128.86	231.35
Madhya Pradesh	558.58	776.37	857.04	1840.16
Dadra and Nagar Haveli	0.00	0.0	2.97	5.46
Goa	0.0	0.0	0.71	3.81
Daman and Diu	0.0	4.0	10.46	14.47
Total Western Region			**2701.78**	**6169.03 (21.67)**
Tamil Nadu	142.58	1061.82	1691.83	2575.22
Andhra Pradesh	137.85	572.97	1867.23	3085.68
Telangana	167.05	527.84	1286.98	3592.09
Kerala	0.03	13.05	74.20	138.59
Karnataka	77.22	145.46	1027.84	6095.56
Puducherry	0.20	0.20	0.08	3.14
Total Southern Region			**5948.16**	**15490.28 (54.42%)**
Bihar	0.0	5.10	108.52	142.45
Odisha	31.76	66.92	79.42	394.73
Jharkhand	16.00	16.19	23.27	34.95
West Bengal	7.21	7.77	26.14	75.95
Sikkim	0.0	0.0	0.0	0.01
Total Eastern Region			**237.35**	**648.09(2.27%)**
Assam	0.00	0.00	11.78	22.40
Tripura	5.00			
Arunachal Pradesh	0.03	0.27	0.27	5.39
Mizoram	0.00	0.00	0.10	0.50
Manipur	0.00	0.00	0.03	3.44

Meghalaya	0.00	0.00	0.01	0.12
Nagaland	0.00	0.00	0.50	1.00
Total North Eastern Region			**17.78**	**37.94 (0.13%)**
Andaman & Nicobar	5.10	5.10	6.56	11.73
Lakshadweep	0.75	0.75	0.75	0.75
Others	0.00	58.31	58.31	0.00
Total Islands & others			**65.62**	**16.78 (0.06%)**
Total India	**3743.97**	**6762.85**	**12288.83**	**28180.66**

Wave Energy

India has a wave theoretical power potential of 40-60 GW. In India, the region of west coast like Maharashtra, Goa, Karnataka and Kerala with Kanyakumari situated in southern tip of Indian peninsula has a capacity of very strong effect of refraction and winds. But, the technology here is not developed enough so as to be able to generate power as expected by the theoretical potential. The research on wave energy was started in 1983. A pilot scale Wave energy plant of capacity 150 KW was installed under this research at Vizhinjam in Thiruvananthapuram, Kerala in 1991.

This wave energy plant was the world's first wave power plant working on oscillating water column technology. The power produced by this plant varied regularly over the year and found maximum power to be produced in the month of monsoon. After being utilized for long, it was further utilized for powering a

reverse osmosis desalination plant in 2004. But, it was not continued as it was not successful and was stopped in 2011.

Following are some of the challenges while generating power from wave energy:

- Low turbine efficiency.
- The cost of turbines is high.
- Non-availability of grid connections at potential sites.
- Inefficient operational experience and uncertain environmental conditions.
- Improper data is very difficult to calculate the result of wave power production on marine creatures.
- Investment in wave energy is one of the very risky expenditures, because of high capital cost.

Due to the above mentioned challenges, government of India has not set any target for wave energy as compared to the targets set for renewable energy power of 175 GW from solar energy (100 GW), wind energy (60 GW), biomass energy (10 GW) and from small hydro energy (5 GW) by 2022 [8].

Biomass Energy

It is a renewable energy source from living or recently living plant and animal materials which can be used as fuel. The agricultural production in India being in huge quantity also generates huge amount of agricultural waste which can be utilized to generate energy either the form of heat or power. According to IREDA, biomass has the potential to replace coal of about 260 million tonnes and has the

capability of saving Rs. 250 billion per year [9]. It is assumed that the biomass energy has the potential to produce 16,000 MW of energy in India. The biomass materials like bagasse, rice husk, straw, cotton stalk, coconut shells, soya husk, de-oiled cake, coffee waste, jute waste, groundnut shells and sawdust can be used for power generation.

Biogas

Biogas is generated by organic waste which includes kitchen waste, vegetables and fruits waste, agricultural waste, leaf waste, etc. India has set a target to build 5,000 large scale commercial size biogas plants to generate 15 million tons of biogas which can produce 12.5 tons of bio-CNG from every plant [10]. The small capacity biogas plant for family purpose has reached to 3.98 million. The residue which is left after generating biogas is known as biogas residue, which can further be used as organic fertilizer.

Ethanol

The biomass feed material can be used in the production of ethanol, for which Indian government started encouraging 2G ethanol production in commercial scale. Ethanol demand in India outreached its high up figure of 3.3% blend rate. It is generated from sugarcane molasses and to a certain extent from grains which can be blended with gasoline.

Biodiesel

India remains in the initial stage of biodiesel market carrying a minimum blend rate with diesel of 0.001% by 2016. Earlier, the production of biodiesel was given weightage to jatropha inedible oil seed, but this could not continue due to agronomic and financial obstruct. Later, biodiesel production started shifting towards utilizing cooking oils, unused oil fractions, inedible oils, animal fat etc.

Waste to Energy

MSW generated is around 55 million tonnes and sewage waste of around 38 billion litres is generated every year in India. Industries also generate large amount of liquid and solid wastes. The waste generation in India is expected to increase by 1-1.33% per capita rate annually. This rate can increase in future because more people have shifted to urban areas from rural areas and lifestyles have changed and due to increase in income consumption levels have increased, and waste generation also increased [6].

References

[1] https://en.wikipedia.org/wiki/Electricity_sector_in_India.

[2] "The True Cost of Coal" Greenpeace 27 November 2008 pp.24-29.

[3] https://en.wikipedia.org/wiki/Energy_in_India.

[4] "PM Modi vows to more than double India's non-fossil fuel target to 450GW | India News - Times of India" (https://timesofindia.indiatimes.co m/india/pm-modi-vows-to-more-thandouble-indias-non-fossil-fuel-target-to-400gw/articlesh ow/71263509.cms). The Times of India, 23 September 2019.

[5] *"Executive Summary Power Sector February 2017" report. Central Electricity Authority, Ministry of Power, Govt. of India. 28 February 2017. Retrieved 24 April 2017.*

[6] https://en.wikipedia.org/wiki/Renewable_energy_in_India [7] https://en.wikipedia.org/wiki/Solar_power_in_India.

[8] "Ocean energy". Energy Alternatives India (EAI),2017.

[9] *"Indian Renewable Energy Development Agency Ltd. | Bio Energy". www.ireda.gov.in.*

[10]"Compressed biogas to beat petrol and diesel with 30% higher mileage" (https://energy.eco nomictimes.indiatimes.com/news/oil-and-gas/compressed-biogas-to-beat-petrol-and-diese lwith-30-higher-mileage/66675432). Retrieved 18 November 2018.

E-Commerce in Today's Scenario

DR.SHYAM KISHORE SINGH

HOD, COMMERCE

R. S. MORE COLLEGE, GOVINDPUR

Introduction

Evidently e- Commerce is becoming predominant at a very fast pace revolutionizing the way we used to shop. With the passage of every minute we see more and more number of consumers across the globe coming under its umbrella and so is the case with the new companies and brands. With the introduction of new players, the market is being more extensive, more competitive and more creative. As with any thing, e-Commerce is also changing itself but at a high velocity bearing new advancements at every moment across the world.

According to IAMAI (Internet and Mobile Association of India), a not-for-profit industry body registered under Societies Act, 1986, the total e-Commerce size (in billion) in 2013 was $ 2.9 which rose to $ 6.0 in 2015 and is expected to grow to $ 101.9 in 2020 i.e. a 6 fold anticipated growth in 5 years.

Similar is the case with the number of online shoppers in India. In the year 2013, the total number of users which was 20 million almost doubled itself to 39 million in the year 2015 and is forecasted to be around 220 million in 2020.

General Trends

A significant change in e- Commerce is that the market share has shifted from B2B (Business to Business) to the B2C (Business to Consumer) segment. Recently, owing to the huge incentive to the Digital India the G2C (Government to Consumer) component is also increasing.

Growth shift to Asia – In spite of US consistent annual growth rates of around 10%, China is the driving the boom in global e-Commerce retail sales . It is so rapid that total sales are expected to double in 3 years adding $1 trillion dollars by 2019.

Competition heats up - New start-ups are entering the market and big established bricks & mortar are increasingly pushing explosion of Marketing Technology (Mar-Tech) tools for commerce.

Subscription based models- Subscription based models are the future – It's not just SaaS (Software as a Service) revenue that has burst out over the recent years. PaaS (Platform as a Service) is now one of the hottest trends in business.

The Rise of Tier 2 and Tier 3Economies

As the internet penetrates deeper in to the Indian demography, it is the tier 2 and 3 cities that are going to stand out and make a difference, as opposed to the saturated markets of the tier 1 and metro cities.

Digital India Impact

Indian government has taken a massive drive to bring the Internet, broadband and wi-fi to remote corners of the country, thus providing the required connectivity for e-Commerce. Furthermore, government is modernizing India Post and aims to develop it as a distribution channel for e-Commerce related services, thereby increasing the search of e-Commerce players and expanding the potential market.

Effect on the Surging of Mobile Payment Wallets

Paytm, the largest Indian mobile payment wallet with more than 100 million users and 2 million transactions a day, saw app downloads going up by three times and payments for offline transactions by five time in the first two days following the government's move. It added one million new saved credit/debit cards in two days -- cards that are used to refill the wallet.

MobiKwik, which has around 35 million customers, said there was 100% growth in customer numbers day-on-day in the past few days. Mobile payment app Chillr, which has 2 million downloads and is promoted by HDFC, has seen a growth of 30% in app usage and a 50% increase in downloads. PayU's digital wallet business, which has over 30 million consumers, saw the amount of wallet loads rise two times in the first two days.

PayU can be used at around 15,000 merchant locations, and is now planning to target even local kirana stores. "Out of our 30 million customers, only about 500,000 transact offline. But this is set to change," said Gupta.

Digital wallet Freecharge has seen a 10-fold surge in the number of retail merchant sign-ups in the past few days, with most of the queries coming from grocery stores, pharmacies and food joints.

UPI platform

For many, e-wallets firms another way to drive this growth is through the recently launched Unified Payment Interface (UPI). UPI is a payment system that allows transactions between two bank accounts through a smartphone, without the trouble of entering credit card details, or net banking passwords. Some like *Mobikwik* have already integrated UPI into their platform.

Some of the popular wallet service providers include *Airtel Money, Citrus Wallet, FreeCharge, iReff, JioMoney Wallet, Mobikwik, m-pesa, Ola Money, Oxigen Wallet, PayTM and PayUMoney*. These apps are available on Android, iOS and Windows Phone as well.

UnionfinanceministerArunJaitleyinhisbudgetspeechthisyearsaid,"Amissionwillbesetupwithatargetof2,500croredigitaltransactionsfor2017-18throughUPI,USSD,AadharPay,IMPSanddebitcards

Bank e-Wallets

Apart from the online payment e-wallets, one can consider using an e-wallet service provided by banks like *SBI Buddy, HDFC's PayzApp*and *ICICI's Pockets*. They provide facilities similar to the third-party e-wallets and can be used even if you do not have an account with the said institution.

PayzApp and *Pockets* differ from the third party payment platforms in that they are virtual debit cards. These also let you save your physical debit and credit card details (except CVV codes).While making a payment via these apps, you can choose to use the virtual debit card - instead of your physical plastic card. Here, *Pockets* supports Unified Payment Interface (UPI), a fund transfer platform that uses a concept similar to that of an email address. When you sign up for UPI, you get a unique ID is linked to your bank details, after authentication. When you initiate a fund transfer, you only need to enter this UPI ID; you don't need to enter bank account number, branch and IFSC code.

In case one have an account with a bank that doesn't have a mobile wallet of its own, then consider *Chillr*. This service has partnered with a number of banks, including Bank of Baroda, Federal Bank, Indian Overseas Bank and Saraswat Bank. Here, transaction charges (plus tax) may be levied wherever applicable.

Digital wallets offer an additional layer of security while making payments since you are not sharing your bank details with online or offline store. Purchase and payment information is transmitted via an encrypted SSL (Secure Sockets Layer) connection, and may also require an "mPIN" or fingerprint for additional authentication (if supported).

Artificial Intelligence

The confluence of Artificial Intelligence and e-Commerce is not only transforming the millions of online transactions taking place every day but also in-store purchase behaviors. Some of its recent developments is as follows:

Visual Search – Developments in the Image Search technology has made it possible for the consumers to choose the products by providing a similar Image. Now someone can look out online for a friend's dress or pair of earrings they saw at a party or a wedding.

Virtual Personal Shopper- Through the now possible intelligent shopping assistants, companies can create more interactive shopping experiences. They are faster than humans and can analyze huge amount of data in minimal time. They are designed to provide product recommendations based on natural conversation and cognitive data derived from the Artificial Intelligence.

Chatbots or Intelligent Agent- These are fully automated and have control over their actions and internal state like matching buyers and sellers. According to Business Insider, 85% of customer interactions will be by non-human by 2020.

Big Data

Big Data is extremely large data sets that may be analyzed computationally to reveal patterns, trends and associations especially relating to human behavior and interactions. It tracks the entire journey of a customer from entry to exit i.e. every click is monitored and analyzed by dividing customers into different segments based on their purchase patterns and demographic details.

It helps in maintaining in inventory accordingly and optimizing the shelf life esp. during the sales season based on the search and purchase information of buyers before the Sales season.

It also analyses data on the demographic profile analyzing the variations during the seasons and festivals of differ regions at different times.

Customer Feedback

Big data helps in processing large amount of feedbacks / reviews that are not in similar formats and stores them in an efficient manner.

Use of text analytics and machine learning categorizes the positive and negative feedbacks into different buckets.

Comments on social media platforms are also identified and tackled by the Big Data.

Real Time Big Data Analytics (RTBDA) detects and resolves issues at the time of purchase.

Personalized offers and Recommendations

Due to big Data Analytics, now it is possible to generate recommendations autonomously for individual users based on their past searches and purchases, as well as on the behavior of other, similar users. The online activities of the user and pages liked by him also help in the formulation of such recommendations.

It highly optimizes the chances for the cross-sell and up-sell. Apart from this, actions of the users on the social media (Likes & clicks) help in attracting useful intelligence about the customer and proper targeting of the personalized offers.

An online shopping store for fashion, *Myntra* make use of Artificial Intelligence for fashion forecasting.

Geo-Targeting using geo-Location

Geo-targeting involves ascertaining the exact or nearby location of your visitors and dynamically tailoring content on your website to be more meaningful to your visitor's geo-location. Geo targeting can also involve redirecting your visitor's to certain pages of you website, depending on their geo-location. In absence of actual GPS location, this is done by the IP (Internet Protocol) tracing or IP intelligence. IP Intelligence enhances the value of existing risk management solutions by establishing a real-time authentication checkpoint.

IP Intelligence allows e-tailers to identify suspicious behavior such as repeated site access from countries with a high rate of fraud or allow them to automatically reject orders from questionable overseas IP origination points. IP Intelligence technology, companies can now administer their online businesses successfully by addressing content issues such as copyrights and syndication by permitting or restricting access to their products based on the location of website visitors.

IP-based geo-location technology is not by any means meant to replace true mobile geo-location—but just to fill the gap and give marketers the ability to localize some content and messages where they would simply not have had that capability previously.

Logistics

Severe competition in the e-Commerce has also transformed the logistics. Nowadays, more numbers of online orders come from tier II and tier III cities, thus necessitating a wider presence of logistics. Emergence of new categories is increasing the complexity, requiring accurate weight reconciliation systems and the creation of new opportunities. Third party logistics (3PL), e-Commerce logistics and cold chain will continue to be the three biggest segments of the overall logistics industry.

The need to deliver items quickly – on demand or same day delivery – due to the popularity of CoD (Cash on Delivery) as compelled the logistics industry to change from traditional logistics support to handling the new and nuanced logistics requirements of e-commerce companies. In fact, many of the earlier players are also diversifying their services portfolio to make space for e-commerce logistics.

The increasing contribution by e-commerce logistics, government's encouragement of domestic entrepreneurship and the rise in domestic consumption will help pave the way for further growth of the logistics and warehousing industry in the years to come.

Last mile delivery, especially of parcels has recently received lots of attention in the media and from investors. Large e-Commerce players, as well as various start-ups, have identified

last-mile services as a key differentiator. But despite the large share of consumers willing to pay extra for same-day delivery, only 2 percent said they would pay sufficiently more to make instant delivery viable (assuming the consumer would have to bear the additional cost of this extremely fast service). In any event, same-day and instant delivery will likely reach a combined share of 20 to 25 percent of the market by 2025, and they are likely to grow significantly further, especially if the service is extended to cover rural areas to some extent. Now, the customers want to track the delivery of ordered item in real time, as in the case of Ola / Uber cab services.

Hyper Local

Hyper Local is concerned with localized delivery with shorter delivery time. In today's fast time when the time and convenience is the most valuable, this concept is fast gaining popularity esp. in the metros. Grofers, Local Oye and Zopper are bridging the Demand Supply gap to solve daily problems from getting groceries to finding reliable handy man. Established big companies are also now in this business like Amazon Kirana, Zip App by Paytm in Bengaluru as pilot project is a glaring example. Snapdeal took the hyperlocal route and launched 'SnapdealInstant' to allow delivery of packages to customers within an hour of placing the order. Having received a whopping $500 million in funding in 2015, Snapdeal also launched four-hour delivery, card-on-delivery, and 90-minutes reverse pickups.

According to a study named 'India Hyperlocal Market Outlook to 2020'-The expected growth was 41% in 2015 with respect to 2014. This market is expected to be at Rupees- -2306 crore by 2020.

Content Marketing

Content marketing is a marketing technique of creating and distributing valuables relevant and consistent content to attract and acquire a clearly defined audience – with the objective of driving profitable custumer action. It is providing additional content for social media marketing. Pininterest and Twitter has buttons which companies post and sell their items directly. Some platforms like Shopify and BigCommerce have Facebook selling built in it.

Sales funnel

One of the central concepts of marketing and sales is the concept of ***Sales Funnel***– through which companies are supposed to systematically move prospects from awareness through consideration to purchase. Though still significant Sales funnel is becoming nonlinear and the customers do not necessarily follow all the steps sequentially. The primary problem with the funnel is that the buying process is no longer linear. Prospects don't just enter at the top of the funnel; instead, they come in at any stage. Furthermore, they often jump stages, stay in a stage indefinitely, or move back and forth between them.

In both B2B and B2C businesses, customers are doing their own research both online and with their colleagues and friends. Prospects are walking themselves through the funnel, and then walking in the door ready to buy. One key trend is the integration of marketing into the product itself. The funnel presumes that marketing is separate from the product. But for digital products like games, entertainment, and software-as-a-service, the marketing is built right into the product. Examples include the *iTunes store* and *Salesforce's App Exchange*. Nowadays, there are numerous web-based products for which the product and the marketing become one thing. Quite interestingly, the funnel changes because with cross-sell and up-sell, you move from awareness to action instantaneously.

Autonomous Vehicles

Autonomous Vehicles technology could help to optimize the industry supply chains and logistics operations of the future, as players employ automation to increase efficiency and flexibility. It offers benefits like:

- Faster Response time
- Less fuel consumption
- Less / No pollution
- Less accidents (due to CAS- Collision Avoidance System)
- Insurance industry transformation
- Development of Software to handle complex driving situations
- Long term automated running without rest.

Effect of Demonetization

The 'period of demonetization' was short for the cash crunch but its effect on the e-Commerce has been of a long term. Its effect on e-Commerce was not all encouraging. One the one hand online payment companies saw a surge in the use of it s digital wallets while

on the other hand online market places and logistics startups have suffered its burnt due to the consequent cash crisis. E-Commerce saw a 30% - 40% reduction in Cash on Delivery (COD) order volumes.

Conclusion

India does not have developed the sufficient infrastructure for the use of e-Commerce. While demonetization does give a thrust to digital payments, it will be years before we see a mass level online payment adoption. But still the relative growth in this area has been stupendous.

In a very short period e-Commerce has transformed the different factors of the marketing and how we as consumers take decisions. The online market is crushing the offline departmental stores and to survive it has to adjust accordingly. Mobile is becoming the new shop. The social media addict young generation is making the new definitions and new rules for the marketers. The seamless integration of the all different technology is the key to tap this market who doesn't want to wait for their deliveries or want to shop a physical store from the comfort of home. Interestingly, we products ordered by us may be implicitly requested by a virtual personality computationally generated by the data fed by us to the 'Big Data'!

NSS ACTIVITIES 2020

Sl. No.	Activity Name	Date	No. of Students Participated
1	Introductory Meet	3 Jan 2020	150
2	Cleaning and Plantation	17 Jan 2020	50
3	Fit India-Cycle Rally	18 Jan 2020	70
4	National Voter Day	25 Jan 2020	78
5	Republic Day	26 Jan 2020	170
6	Death Anniversary of Mahatma Gandhiji	30 Jan 2020	130
7	Mother Language Day	21 Feb 2020	130
8	International Women Day	8 March 2020	200
9	National Forest Day	21 March 2020	120
10	World Health Day	7 April 2020	70
11	World Temple Day	1 May 2020	50
12	Mask Distribution	3 June 2020	60
13	International Yoga Day	21 June 2020	50
14	Independence Day	15 Aug 2020	60
15	Teacher's Day	5 Sep 2020	75
16	Mahatma Gandhi Jayanti	2 Oct 2020	65
17	Bal Diwas	14 Nov 2020	65

NSS ACTIVITIES 2020

NSS ACTIVITIES 2020

NSS ACTIVITIES 2020

NSS ACTIVITIES 2021

Sl. No.	Activity Name	Date	No. of Students Participated
1	Netaji Subhash Chandra Bose Jayanti	23 Jan 2021	150
2	National Voter Day	25 Jan 2021	80
3	Republic Day	26 Jan 2021	150
4	Death Anniversary of Mahatma Gandhiji	30 Jan 2021	70
5	International Women Day	8 March 2021	80
6	Start-up Seminar	17 March 2021	78
7	World Happiness Day	20 March 2021	74
8	Webinar on Placement After Graduation	24 March 2021	74
9	International Yoga Day	21 June 2021	50

NSS ACTIVITIES 2021

दैनिक भास्कर

धनबाद 25-03-2021

सबका स्वच्छता का ध्यान रखन का रा'

विद्यार्थियों के लिए दृढ़ निश्चय जरूरी: डॉ प्रवीण

धनबाद | आरएस मोर कॉलेज.

NSS ACTIVITIES 2021

स्टार्टअप और रोजगार के अवसर विषय पर परिचर्चा

गोविंदपुर | प्रतिनिधि

आरएस मोर कॉलेज में बुधवार को स्टार्टअप और रोजगार के अवसर विषय पर कॉलेज के सभागार में परिचर्चा आयोजित की गई। परिचर्चा की शुरुआत करते हुए प्राचार्य डॉ. प्रवीण सिंह ने कहा कि स्टार्टअप देश को नया आयाम दे सकता है। आने वाले दिनों में स्टार्टअप इंडिया, देश के भविष्य के लिए स्टैंडअप इंडिया होगा।

धनबाद के अग्रणी स्टार्टअप मैनेजर सह सॉफ्टवेयर डेवलपर शान्तनु बनर्जी ने कहा कि छात्रों को स्टार्टअप के क्षेत्र में आगे आने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि स्टार्टअप में पूरी निष्ठा के साथ कड़ी मेहनत करें, तो सफलता जरूर मिलेगी। यूनाइटेड बैंक, गोविंदपुर के मैनेजर अशोक ठक्कर ने कहा कि स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य देश में स्टार्टअप्स और नए विचारों के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है। जिससे देश का आर्थिक विकास हो एवं बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हों।

प्राध्यापक डॉ. अमित प्रसाद ने कहा कि स्टार्टअप की दुनिया की सबसे बड़ी खूबसूरती (काम करने का तरीका) इसकी विघटन और विविधीकरण की क्षमता है। परिचर्चा में डॉ. रतन कुमार, डॉ. अजीत कुमार बर्णवाल, डॉ. सूर्यनाथ सिंह, डॉ. कुहेली बनर्जी, डॉ. मीना कुमारी, प्रो. त्रिपुरारी कुमार, प्रो. प्रकाश कुमार प्रसाद, प्रो. विनोद एक्का, प्रो. सत्यनारायण गोराई, इकबाल अंसारी, राकेश ठाकुर, राजकुमार पाल, स्नेहलता होरो, मो. शारिक, सुजीत मंडल, प्रदीप महतो एवं अन्य उपस्थित थे।

NSS ACTIVITIES 2021

STUDENT PLACEMENT CELL

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Member
3	Dr. S. K. Singh, Dy CE	Member
4	Dr. Amit Prasad, Deptt. of Commerce	Member
5	Sri Tripurari Kumar, Deptt. of Economics	Member
6	Dr. S. N. Singh, Deptt. of Hindi	Member
7	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psy	Member
8	Dr. Khuhali Banerjee, Deptt. of Commerce	Member
9	Sri Ratan Toppo, Assistant	Member
10	Sri Shankar Rabidas, Assistant	Member

STUDENT GUIDANCE & COUNSELLING CELL

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Dr. Ratna Kumar, NSS Coordinator	Member
3	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
4	Sri Awaneesh Maurya, Deptt. of Pol. Sc.	Member
5	Sri S. N. Gorai, Deptt. of History	Member
6	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psy.	Member
7	Sri Vinod Kumar Ekka, Deptt. of Hindi	Member
8	Sri Anand Prakash, Assistant	Member

CULTURAL COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Dr. Ratna Kumar, NSS Coordinator	Member
3	Dr. Amit Prasad, Deptt. of Commerce	Member
4	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psy.	Member
5	Sri Avaneesh Maurya, Deptt. of Pol. Sc.	Member
6	Dr. Kuhali Banerjee, Deptt. of Commerce	Member
7	Dr. Neena Kumari, Deptt. of Psychology	Member

INTERNAL COMPLAINT CELL

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Member
3	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Member
4	Dr. Ratna Kumar, NSS Coordinator	Member
5	Dr. S. N. Singh, Deptt. of Hindi	Member

MINORITY CELL

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Md. Sharique, Head Assistant	Member
3	Sri Ratan Toppo, Assistant	Member
4	Sri Ataul Ansari, Peon	Member

IQAC COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Pravin Singh , Principal	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap , Prof-in-Charge	IQAC Coordinator
3	Dr. Parmeshwar Mahato , Bursar-I	Member
4	Sri Manoranjan Mahato , CE	Member
5	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
6	Dr. S. K. Singh, Dy CE	Member
7	Dr.(Smt.) Ratna Kumar, NSS Coordinator	Member
8	Dr. Amit Prasad, Deptt. of Commerce	Member
9	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psychology	Member
10	Sri Tripurari Kumar, Deptt. of Economics	Member
11	Md. Sharique, Head Assistant	Member
12	Sri Pradeep Kumar Mahto, Accountant	Member
13	Sri Ratan Topps, Assistant, Examination	Member
14	DR. M. S. Alam, Principal Scientist, CSIR-CIMFR, Dhanbad	Nominated Member
15	Dr. Anand Modi, MS(Orho), Maa Tara Nursing Home, Govindpur, Dhanbad	Nominated Member
16	Dr. B. K. Sinha, Principal, PKRM College, Dhanbad	Nominated Member
17	Dr. S. K. Singh, Director, BIT, Sindri	Nominated Member
18	Dr. Dhananjay Kumar Singh, RUSA Coordinator, BBMKU, Dhanbad	Nominated Member
19	Sri Nand Lal Agarwala, Industrialist, Govindpur, Dhanbad	Nominated Member
20	Dr. K. Bandyopadhay, IQAC-Coordinator, BBMKU, Dhanbad	Nominated Member

STEERING COMMITTEE FOR SSR

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Pravin Singh , Principal	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap , Prof-in-Charge	Coordinator
3	Dr. Parmeshwar Mahato , Bursar-I	Member
4	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
5	Dr. S. K. Singh, Dy CE	Member
6	Dr. Amit Prasad, Deptt. of Commerce	Member
7	Dr. S N Singh, Deptt. of Hindi	Member
8	Dr. Kuhali Banerjee, Deptt. of Commerce	Member

BUDGET AUDIT COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Pravin Singh , Principal	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap , Prof-in-Charge	Coordinator
3	Dr. Parmeshwar Mahato , Bursar-I	Member
4	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
5	Dr. S. K. Singh, Dy CE	Member
6	Dr. Amit Prasad, Deptt. of Commerce	Member
7	Dr. S N Singh, Deptt. of Hindi	Member
8	Dr. Kuhali Banerjee, Deptt. of Commerce	Member

PURCHASE COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Pravin Singh , Principal	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap , Prof-in-Charge	Member
3	Dr. Parmeshwar Mahato , Bursar-I	Member
4	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
5	Dr. M. R. Mahato, CE	Member
6	Dr. S. K. Singh, Dy CE	Member
7	Md. Sharique, Head Assistant	Member
8	Sri P. K. Mahto, Accountant	Member

ESTATE COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Pravin Singh , Principal	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap , Prof-in-Charge	Member
3	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
4	Dr. S. N. Singh, Deptt. of Hindi	Member
5	Sri P. K. Mahto, Accountant	Member
6	Md. Sharique, Head Assistant	Member
7	Sri Sujit Kumar Mandal, Assistant	Member

LIBRARY COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Pravin Singh , Principal	Chairperson
2	Dr. Parmeshwar Mahato , Bursar-I	Member
3	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
4	Sri Avaneesh Maurya, Deptt. of Pol. Sc.	Member
5	Dr. Shuvra Pradhan, Deptt. of Chemistry	Member
6	Sri S. N. Choudhary, Assistant	Member
7	Sri Dhayamay Kumar Mandal, Assistant	Member

DISCIPLINE & ANTI RAGGING COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Pravin Singh , Principal	Chairperson
2	Dr. S. K. Singh, Dy CE	Member
3	Dr. Ratna Kumar, NSS Coordinator	Member
4	Sri S. N. Singh, Deptt. of Hindi	Member
5	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psy	Member
6	Dr. Shuvra Pradhan, Deptt. of Chemistry	Member
7	Sri Ratan Toppo, Assistant	Member
8	Sri Sujit Kumar Mandal, Assistant	Member

WOMEN CELL

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Pravin Singh , Principal	Chairperson
2	Dr. Ratna Kumar, NSS Coordinator	Member
3	Dr. Shuvra Pradhan, Deptt. of Chemistry	Member
4	Dr. Neena Kumari, Deptt. of Psy	Member
5	Dr. Kuhali Banerjee, Deptt. of Commerce	Member

ADMISSION COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Admission Incharge/ Nodal Officer
2	Dr. Amit Prasad, Deptt. of Commerce	Member
3	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psy	Member

DIVYANG KOSHANG COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Convener
2	Prof. S. K. Singh, Dy. CE	Member
3	Sri S. N. Choudhary, Assistant	Member

FREESHIP COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Convener
2	Sri Manoranjan Mahato, CE	Member
3	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
4	Dr. S. K. Singh, Dy CE	Member

GRIEVANCE REDRESSAL CELL

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Dr. Parmeshwar Mahto, Bursar-I	Member
3	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Member
4	Dr. S. K. Singh, Dy. CE	Member
5	Dr. Neena Kumari, Deptt. of Psy	Member
6	Sri Ratan Toppo, Assistant	Member

DIGITALIZATION- WEBSITE COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Member
3	Dr. Amit Prasad, Deptt. of Commerce	Member
4	Sri Tripurari Kumar, Deptt. of Economics	Member
5	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psychology	Member
6	Dr. Kuhali Banerjee, Deptt. of Commerce	Member
7	Md. Sharique, Head Assistant	Member

OTHER BACKWARD CELL

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Sri S. C. Dan, Bursar-II	Member
3	Dr. S. N. Singh, Deptt. of Hindi	Member
4	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psy	Member
5	Sri Anand Prakash, Assistant	Member
6	Sri Sujit Kumar Mandal, Assistant	Member

SC-ST CELL

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Sri Vinod Kumar Ekka, Deptt. of Hindi	Member
3	Sri Shankar Ravidas, Assistant	Member
4	Sri Dhaneshwar Ram, Assistant	Member
5	Sri Manoj Tirkey, Assistant	Member
6	Sri Etwa Toppo, Assistant	Member

SPORTS COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Dr. S. K. Singh, Dy. CE	Member
3	Dr. Ratna Kumar, NSS Coordinator	Member
4	Sri Prakash Kumar Prasad, Deptt. of Psy	Member
5	Dr. S. N. Singh, Deptt. of Hindi	Member
6	Sri Awaneesh Maurya, Deptt. of Pol. Sc.	Member
7	Dr. Neena Kumari, Deptt. of Psy	Member
8	Sri Manoj Tirkey, Assistant	Member

DECORATION & GREEN CAMPUS COMMITTEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Dr.Pravin Singh, Principal-in-charge	Chairperson
2	Dr. Rajendra Pratap, Prof-in-charge	Member
3	Dr. Ratna Kumar, NSS Coordinator	Member
4	Dr. S. N. Singh, Deptt. of Hindi	Member
5	Sri Vinod Kumar Ekka, Deptt. of Hindi	Member
6	Sri Dhaneshwar Ram, Assistant	Member
7	Sri Shankar Ravidas, Assistant	Member

PAY FIXATION COMMITEE

Sl. No.	Name	Designation
1	Sri S.C. Dan, Bursar-II	Convener
2	Dr. S. K. Singh, Dy CE	Member
3	Dr. P. Mahto, Bursar-I	Member
4	Sri P. K. Mahto, Accountant	Member

"ভারত-পথিক রবীন্দ্রনাথ"

By- Dr. Ratna Kumar

Dept. Of Bengali

'বেদে' যাঁকে বলছে-'বিশ্বমনা', প্রকৃতপক্ষে এই বিশেষণে বিভূষিত করা যায় একমাত্র রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরকেই।বহু মুখী ছিল তাঁর ব্যক্তিত্ব ও প্রতিভা।তিনি শুধু বাংলার বা ভারতবর্ষের কবি নন,বিশ্বের কবি বিশ্বমানবের কবি। "এই ভারতের মহামানবের সাগর তীরে"যিনি সকল মানুষের মিলন সাধনা করেছিলেন, স্বপ্ন দেখে ছিলেন বিশ্বের দরবারে ভারতের স্বাতন্ত্র্যকে তুলে ধরার ।

বস্তুত পক্ষে একাধারে ভারতীয় সাহিত্যে ও বিশ্বের জীবন পথের বিকল্প মন্ত্র একমাত্র রবীন্দ্র -প্রতিভার মধ্যেই খুঁজে পাওয়া যায় ।তাই রবীন্দ্রনাথ ভারত পথিক ও বিশ্বকবি । নিজের দেশে সম্পর্কে মনে মনে উচ্চাকাঙ্খা আন্তরিক ভাবে পোষণ করতেন বলেই রবীন্দ্রনাথ উদার-চিত্তে পশ্চিমকে সাদর আমন্ত্রিত করতে পেরেছিলেন-

"এসো হে আর্য এসো অনার্য হিন্দু-মুসলমান,

এসো এসো আজ তুমি ইংরাজ,এসো এসো খৃশ্চান ।

রবীন্দ্রনাথ বিজ্ঞান ও তত্ত্বজ্ঞানের অপূর্ব সমাবেশে সচেষ্ট হয়ে ছিলেন তাই তিনি বিশ্বকে আহ্বান করতে পেরেছিলেন শান্তি নিকেতনের নীড়ে । তাঁর বক্তব্য-'পূর্ব-পশ্চিমের চিত্ত যদি বিচ্ছিন্ন হয় তা হলে উভয়ই ব্যর্থ হবে ।'তিনি আরও বলছেন-"এই মিলনের অভাবে পূর্ব দেশে দৈন্যপীড়িত,সে নির্জীব আর পশ্চিম অশান্তির দ্বারা ক্ষুব্দ্ধ,সে নিরানন্দ ।"

ভারতবর্ষের ইতিহাস, সংস্কৃতি এবং ভারতের সঙ্গে সম্পৃক্ত যাবতীয় মহৎ ও শুভ কর্ম প্রচেষ্টার মধ্যেই কবিগুরুর সম্পর্ক ছিল গভীর ও নিবিড়ি ।কিন্তু কোনো প্রকার উন্নাসিকতা তাঁকে কোনো দিনই আচ্ছন্ন করে রাখতে পারেনি ।পৃথিবীর অন্যান্য দেশ ও জাতি থেকে নিজেকে বিচ্ছিন্ন করে রেখে আত্মসন্তুষ্টির উচ্চ-সিংহাসনে ভারতকে স্থাপিত করে অপূর্ব স্বাতন্ত্র্যবোধের গৌরব অর্জনের কোনো ইচ্ছাই তাঁর ছিল না ।বিশ্বের বিভিন্ন প্রান্তে যে সব মহত্তম বাণী ও শ্রেষ্ঠতম কর্ম সাধিত হয়েছে তাঁদের সসম্মানে ভারতে আবাহন করে আনার পক্ষে রবীন্দ্রনাথ ছিলেন যোলো আনা আগ্রহী ।তাঁর স্বপ্নের-"ভারত"প্রকৃতপক্ষে ইতিহাসের ভারত ।বর্তমান ভারতে বাংলা ভাষা দেশ-সংকীর্ণতায় কলুষিত ।তার পুনঃর্জাগরণ প্রয়োজন ।তাই রবীন্দ্রনাথ আমাদের পক্ষে এখন অপরিহার্য ।কারণ হিংস্রতা আজ মানুষের নিত্যসঙ্গী এবং মিথ্যা, প্রতিমুহূর্তের আচরণ হয়ে দাঁড়িয়েছে ।এই অন্ধকার নিমজ্জনের হাত থেকে আমরা উঠে আসতে পারি শুধু মাত্র রবীন্দ্রনাথের হাত ধরেই ।যিনি আমাদের সকল বয়সের বন্ধু ও আশ্রয়,তাঁর কাছেই আছে আজকের রুগ্ন 'বাংলাভাষার'শুশ্রূষা ।রবীন্দ্রনাথ বিশ্বাস করতেন ইংরেজে সভ্যতা

ও সৃষ্টির সঙ্গে আমাদের পরিচয়, আমাদের আঙ্গিক উন্নতি ঘটবে, চিত্তের প্রসারতা সাধন করবে ।বস্তুত, আমরা লাভবান হয়েছি পাশ্চাত্য সাহিত্য ও সংস্কৃতির সান্নিধ্যে এসে।আধুনিক বাংলা সাহিত্যে এমন একটি শাখা ও পাওয়া যাবে কিনা সন্দেহ।ইংরেজি সাহিত্য যাকে প্রত্যক্ষ বা পরোক্ষভাবে প্রভাবিত করেনি।

"ভারত-পথিক" রবীন্দ্রনাথ আমাদের মনে সতত স্ফুর্তি এক বিরল ব্যক্তিত্বের অসামান্য ক্ষমতার অধিকারী ।তাঁর এই স্মরনীয় ও বরনীয় ব্যক্তিত্ব আমাদের নিশ্বাসে-প্রশ্বাসে জড়িয়ে আছে, ছড়িয়ে আছে রবীন্দ্রনাথের মনমাতানো, প্রাণ উচ্ছল করা গান ।আমাদের অভিব্যক্তি পেয়েছে ।তাঁর অতুলনীয় সৃষ্টিতে নব-নব ভাষা, তাঁর রচনার নির্যাস আমাদের চেতনায়, আমাদের বোধে, আমাদের প্রাণের ভেতরে, আমাদের মনের উৎসমুখে ।আমরা যে কি ভাবে একাকার হয়ে গেছি, সে কথা আমরা নিজেরাই ভালো করে জানি না।

আনন্দের সাধনা এবং সুন্দরের আরাধনা এই দুই নিয়ে রবীন্দ্রনাথের জীবন। সমগ্র রবীন্দ্রসাহিত্যের মূল প্রেরণা ই হল বিশ্ববোধ ।এই বিশ্বচেতনার দ্বারা বিশ্বজগৎকে সম্পুর্ন উপলব্ধি এবং সীমা র মধ্যে অসীমের সহিত মিলন সাধণ সমানার্থক ।এই সীমা ওঅসীমের বিচিত্র লীলাই হল রবীন্দ্রসাহিত্য ।তাঁর ভাষায়-

"সীমার মাঝে ,অসীম ,তুমি বাজাও আপন সুর।

আমার মধ্যে তোমার প্রকাশ তাই এত মধুর।

কত বর্ণে কত গন্ধে, কত গানে কত ছন্দে,

অরূপ,তোমার রূপের লীলায় জাগে হৃদয়-পুর---

আমার মধ্যে তোমার শোভা এমন সুমধুর।।

তাঁর ভগবৎ প্রেমে এবং মানবিক প্রেমের পর ই অনিবার্য ভাবে স্বদেশ প্রেমের কথা এসে যায়, এখানেও তিনি অতুলনীয়! কারও সঙ্গে তাঁর তুলনা চলে না ।তাঁর তুলনা তিনি নিজেই, অন্য কেউ নন। এমন উজাড় করে নিজেকে নি:শেষ করে আর কেও আমাদের দিতে পারেনি।

রবীন্দ্রনাথ যে, প্রজ্ঞার অধিকারী ছিলেন, তার প্রমাণ আমরা পাই তার বিভিন্ন রচনা এবং সঙ্গীতে। কবি, যা কিছু রচনা বা সৃষ্টি

করেছিলেন, সমস্তই তাঁর সৃজনশীল মনের দান।যা-অকৃপণ হস্তে তিনি আমাদের দান করে গেছেন। তিনি সত্যদ্রষ্টা কবি বলে সমাজে, ধর্মে, শিক্ষা ব্যবস্থায় সর্বত্র সংস্কারক ও দেশবন্ধু রূপে দেখা দিয়েছেন ।

রবীন্দ্রনাথের নিজের দেশের প্রতি গভীর আস্থা ও মমত্ববোধ ছিল, যার প্রমাণ আমরা পাই- তাঁর বড়ো আদরের "বিশ্বভারতী"গড়ার পেছনে। "বিশ্বভারতী", রবীন্দ্রনাথের একটি বড় ফসল।বিশ্বভারতী তাঁর শ্রেষ্ঠ সন্তানদের মধ্যে অন্যতম।রবীন্দ্রনাথ তাঁর নিজের চিন্তা, ভাবনা, ও জীবনাদর্শকে অপরূপ সৃষ্টির মধ্যে যে, কত নিপুণ ভাবে পরিব্যাপ্ত করতে পেরেছেন তা ভাবলেও বিস্ময়ে হতবাক হতে হয়।

विलुप्त होती भारतीय संस्कृति

सत्य नारायण गोराई
इतिहास विभाग
आर. एस. मोर कॉलेज गोविन्दपुर

भारतवर्ष की सभ्यता और संस्कृति महान है । जब सिकंदर भारत पर आक्रमण करने आ रहा था तब उसने अपने गुरू अरस्तु से पुछा "गुरूदेव मैं भारत से आप के लिए क्या लाऊँ ? तो उसके गुरू ने उत्तर दिया – सिकंदर भारत गुरूओं का देश है मेरे लिए वहाँ से गुरू लाना"। आज जो देश अपने आप को सभ्य कहते हैं , उस समय वे देश अस्तित्व में ही नहीं था या फिर जंगली अवस्था में था ।

उस समय भारत की इस पवित्र भूमि पर हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों द्वारा वैदिक ऋचाएं लिखी जा रही थी वेद मंत्र गुजयमान हो रहा था तथा यज्ञ की पावन ज्वाला की सुगंध पुरे वातावरण को सुगंधित कर रहा था।

संस्कृति वह होती है जो कर्म के रूप में व्यक्त होती है और कर्म निश्चय ही विचारों पर आधारित होता है जो ज्ञान एवं हमारे कर्मो को श्रेष्ठ बनाती है ।

हमारी प्राचीन संस्कृति हमें गुरूओं का सम्मान करना , बुजुर्गो की सेवा करना , निर्धन एवं असहाय की सहायता करना , पिता की आज्ञा पालन करना , जन्मभूमि से प्रेम करना , अपने सगे–संबंधियों से स्नेह करना सिखाती है । हमारी संस्कृति की यह विशेषता है कि यह संस्कृति

किसी राष्ट्र या जाति तक सीमित नहीं है वरन् यह सम्पूर्ण विश्व एवं जाति के कल्याण की कामना से प्रेरित है । वैदिक ऋषि सारे विश्व को श्रेष्ठ बनाना चाहते थे । अतः हमारी संस्कृति कहती है –

"अयं निजा परो वेति गणना लघु चेतषाम्
उदार चरितानं तु वसुधैव कुटुंबकम्"

भारतीय संस्कृति उदार ग्रहणशील एवं समय के साथ चलती रही है , अनेक विदेशी संस्कृति इस से टकराकर नष्ट हो गई या इसी में सम्मिलित हो गई । यहाँ समय–समय पर हूण , शक , कुषाण , पठान , पारसी , यहुदी ईसाई सभी ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करना चाहा लेकिन नहीं कर पाये ।

सर्वधर्म सम्भाव ही हमारी भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। किन्तु आज विकास के नाम पर पश्चिमी सभ्यता का अंधाधुन्ध अनुकरण हो रहा है। पश्चिमी ज्ञान और भाषा को महत्व दिया जा रहा है खान–पान , पहनावा , सब कुछ में हम पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण कर रहे है ।

आज बच्चों में ना तो संस्कार है और ना ही हम अपने बच्चों को सभ्यता और संस्कृति की जानकारी देते है , जो कि राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है । हमें उनको यह बताना होगा कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है ।

आज पुरा विश्व हमारी संस्कृति से ज्ञान अर्जित करता हे। हमें इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि जो राष्ट्र अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूल जाता है उसका पतन निश्चित होता है ।

होली नही, नया साल हैं भारत का

रचियता –– डॉ. अविनाश मौर्या (सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान)

चैत का प्रथम दिन भारतीय गणना का नया साल प्राचीन काल से परंपरागत मनाया जा रहा है । विक्रमी संवत का नया साल विद्वान् चक्रवती सम्राट विक्रमादित्य की जयंती के रूप में यह त्यौहार मनाया जाता रहा है । रंग खेलना नया साल की पहचान है । मुस्लिम में तथा पारसी में भी अपने निरोज में रंग खेलने की परंपरा है । संसार में सबसे पहले नया साल का प्रचलन ईसा पूर्व 57 में विक्रमी संवत का प्रारंभ हुआ । इसी की प्रेरणा से अन्य राष्ट्रों एवम धर्मों में भी नया साल मनाने का प्रचलन हुआ । कालांतर में जब देश गुलाम हुआ तो विदेशी शासकों द्वारा इसे होली का नाम दिया गया तथा होली की कहानी लिखकर होलिका दहन का प्रचलन हुआ, जिससे भारतीयों का नया साल विलुप्त हो जाय । इस सही जानकारी को जानकर भारतीय संस्कृति के अनुयायी होली मिलन के स्थान पर नव वर्ष मिलन त्योहार या समारोह मना कर सुधार का प्रचलन प्रारंभ करें ।

Sports

Cultural Activities

Cultural Activities

प्रेरक व्यक्तित्व : नेताजी सुभाष चंद्र बोस

विनोद कुमार एक्का
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
आर. एस. मोर कॉलेज गोविन्दपुर , धनबाद

किसी भी राष्ट्र के समक्ष सबसे प्रमुख प्रश्न के रूप में चिंतन सदैव यही रहता है कि उसका युवा वर्ग राष्ट्र निर्माण में क्या और किसी प्रकार की भूमिका निभाएगा । कोई भी राष्ट्र चिंतक , देशप्रेमी यह कभी नहीं चहेगा कि उसका युवा वर्ग आत्मकेंद्रित , दंभी , तुच्छ स्वार्थों के पूति के लिए राष्ट्र भाव को तिरोहित करते हुए राष्ट्र हितों से स्वयं को अलग कर ले । उसकी कथनी–करनी में अंतर हो या उसका व्यक्तित्व पौरूषहीन हो जाए इसकी कल्पना राष्ट्र निर्माता कभी नहीं चहेगा । प्रत्येक समाज स्वाभाविक रूप से अपने युवाओं के प्रति आशान्वित रहती है वह मानता है कि उसका युवा वर्ग अपने वीरता , शौर्य , पराक्रम , तथा समर्पण से ओतप्रोत होकर उज्जवल भविष्य हेतु राष्ट्र के निर्माण में अपनी महती भूमिका निभाएगा । यह स्वाभाविक भी है । युवा वर्ग अगर गुमराह हो जाए तो देश की उज्जवल भविष्य की कल्पना नही की जा सकती प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति इस बात को निश्चित रूप से जानता है । अगर हम यह मानते हैं कि वर्तमान नीतियों के द्वारा युवाओं के हृदय में राष्ट्रभक्ति पैदा की जा सकती तो यह हमारा भ्रम है जैसे बबूल के बीज जमींन में डालकर उससे आम के मीठे फल प्राप्त नहीं किये जा सकते उसी प्रकार गलत आदशा को महिमामंडित कर युवाओं के समक्ष रख किसी भी साकारात्माक भावक्रिया की अपेक्षा नहीं की जा सकती और न ही इसे राष्ट्र की आशा का आधारस्तंभ बनाया जा सकता है । अपितु आवश्यक यह है कि युवाओं के हृदय में राष्ट्रभक्ति का ज्वार भरने के लिए , उनके मन को राष्ट्रभाव के प्रकाश पुंज से आलोकित करने के लिए आदर्शस्वरूप ऐसे राष्ट्र नायकां का चित्र उनके समक्ष प्रस्तुत की जाए ताकि चरित्र के पावन यज्ञकुण्ड में सारे कलुष मिट जाए और युवा मन उनके प्रेरक राष्ट्रीय जीवन गाथाओं से प्रेरणा लेकर बलिदान और समर्पण की भावनाओं से उद्वेलित हो सके ।

यहाँ सबसे बड़ा प्रश्न यह उठ कर आता है कि मातृभूमि के लिए ऐसे समर्पित युवा पीढ़ी किस प्रकार तैयार हो । हम हर गलतियों के लिए चाहे वह अनुशासनहीनता हो , स्वार्थपरायणता हो , स्वाभिमान–शून्यता हो या दंभ इत्यादि सभी नाकारात्मक कार्य दोषों का बोझ इन पर डाल देते हैं , इनके साकारात्मक उत्थान के लिए हम कोई सार्थक प्रयास नहीं करते । राष्ट्र–निर्माण में युवाओं की भूमिका को लेकर हम कोई गंभीर बहस नहीं चलाते । युवाओं में देश–प्रेम और भारतीयता का अलख जगाने के लिए हमारे इतिहासकारों ने किसी महानायक को उसके उदात्त रूप में उसे चित्रित नहीं किया । इसके जड़ों में जाकर देखे तो इसका मूल कारण हमारी शिक्षा प्रणाली है जो प्रारंभ से राजनीति का शिकार रही है ।

हमारे देश में राष्ट्र नायकों की एक लम्बी श्रृंखला है जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया । अपनी मातृभूमि के लिए उन्होंने कोई समझौता नहीं किया। कुछ तो हंसते–हंसते फाँसी पर झुल गए तो कुछ बलिदानी के गुमनामी अंधेरे में खो गए और कभी किसी से संधियां नहीं की । नेताजी सुभाष चंद्र बोस ऐसे ही एक महानायक थे जिनके 'जय हिन्द' के उद्घोष मात्र से ही युवाओं में भारत माता की विजय की अदम्य आकांक्षा व संकल्प पैदा होता था । सुभाष ने पिता की चुनौती स्वीकार कर आईसीसी की परीक्षा तो विदेश जाकर उर्त्तीण कर ली परन्तु उच्च पद संभालने का आमंत्रण दिए जाने पर भी उन्होंने इनकार कर दिया ।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संम्पन्न बंगाली परिवार में हुआ था । बोस के पिता का नाम जानकीनाथ बोस और माँ का नाम प्रभावती था । जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहुर वकील थे । प्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 संतानें थी , जिसमें 6 बेटियां और 8 बेटे थे । सुभाष चंद्र बोस उनकी नौवीं संतान और पांचवे बेटे थे ।

नेताजी की प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवनशॉ कॉलेजिएट स्कूल में हुई । तत्पश्चात् उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेजिडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई । बाद में भारतीय प्रशासनिक सेवा (इण्डियन सिविल सर्विस)की तैयारी के लिए उनके माता–पिता ने बोस को इंग्लैड़ के कैंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया । अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों के लिए सिविल सिर्विस में जाना बहुत कठिन था किंतु उन्होंने सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया ।

1921 में भारत में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों का समाचार पाकर बोस ने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली और शीघ्र भारत लौट आए । सिविल सिर्विस छोड़ने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए । सुभाष चंद्र बोस महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे । वास्तव में महात्मा गांधी उदार दल का नेतृत्व करते थे , वहीं सुभाष चंद्र बोस जोशीले क्रांतिकारी दल के प्रिय थे । महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस के विचार भिन्न–भिन्न थे लेकिन वे यह अच्छी तरह जानते थे कि महात्मा गांधी और उनका मकसद एक है , यानी देश की आजादी । सबसे पहले गांधीजी को राष्ट्रपिता कहकर नेताजी ने ही संबोधित किया था ।

1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद उन्होंने राष्ट्रीय योजना आयोग का गठन किया । यह नीति गांधीवादी आर्थिक विचारों के अनुकूल नहीं थे । 1939 में बोस पुनः एक गांधीवादी प्रतिद्वंदी को हराकर विजयी हुए । गांधीजी ने इसे अपनी हार के रुप में लिया । उनके अध्यक्ष चुने जाने पर गांधीजी ने कहा कि बोस की जीत मेरी हार है और ऐसा लगने लगा कि वह कांग्रेस वर्किंग कमेटी से त्यागपत्र दे देंगे । गांधीजी के विरोध के चलत इस 'विद्रोही अध्यक्ष' ने त्यागपत्र देने की आवश्यकता महसूस की । गांधीजी के लगातार विरोध को देखते हुए उन्होंने स्वयं काग्रेस छोड़ दी ।

इसी बीच दुसरा विश्व युद्ध छिड़ गया । बोस का मानना था कि अंग्रेजों के दुश्मनों से मिलकर आजादी हासिल की जा सकती है । उनके विचारों को देखते हुए उन्हें ब्रिटिश सरकार ने कलकत्ता में नजरबंद कर लिया लेकिन वह अपने भतीजे शिशिर कुमार बोस की सहायता से वहां से भाग निकले । वह अफगानिस्तान और सोवियत संघ होते हुए जर्मनी जा पहुँचे ।

सक्रिय राजनीति में आने से पहले नेताजी ने पूरी दुनिया का भ्रमण किया । वह 1933 से 36 तक यूरोप में रहे । यूरोप मे यह दौर था हिटलर के नाजीवाद और मुसोलिनी के फासीवाद का । नाजीवाद और फासीवाद का निशाना इंग्लैंड़ था , जिसने पहले विश्व युद्ध के बाद जर्मनी पर एकतरफा समझौते थोपे थे । वे उसका बदला इंग्लैंड से लेना चाहते थे । भारत पर भी अंग्रेजों का कब्जा था और इंग्लैंड के खिलाफ लड़ाई में नेताजी को हिटलर और मुसोलिनी में भविष्य का मित्र दिखाई पड़ रहा था । । उनका मानना था दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है और स्वतंत्रता हासिल करने के लिए राजनीतिक गतिविधियों के साथ–साथ कूटनीतिक और सैन्य सहयोग की भी जरूरत पड़ती है ।

'नेताजी' के नाम से प्रसिद्ध सुभाष चंद्र बोस सशक्त क्रांति द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से 21 अक्टूबर ,1943 को 'आजाद हिन्द फौज' का गठन करते हैं । संगठन के प्रतीक चिह्न के रूप में झण्डे पर दहाड़ते हुए बाघ का चित्र बना होता है । नेताजी अपनी

आजाद हिंद फौज के साथ 4 जुलाई 1944 को बर्मा पहुंचे । यहीं पर उन्होंने 'तुम मुझे खून दो , मैं तुम्हें आजादी दूंगा' अपना प्रसिद्ध नारा दिया ।

18 अगस्त 1945 को टोक्यो (जापान) जाते समय ताइवान के पास नेताजी का एक हवाई दुर्घटना में निधन हुआ बताया जाता है , लेकिन उनका शव नहीं मिल पाया । नेताजी की मौत के कारणों पर आज भी विवाद बना हुआ है । हाल ही में उनसे जुड़ी फाइलों के सार्वजनिक होने से यह भ्रम और बढ़ा है , वहीं उस कथित दुर्घटना के बाद भी उनके अस्तित्व की पुष्टि हुई है । नेताजी जैसे महान आत्मा भले आज हमारे बीच रहे या न रहे अपितु उनका प्रकाश पुजं हम युवाओं को हमेशा अलोकित करता रहेगा ।

अगर जीवन में संघर्ष न रहे, किसी भी भय का सामना न करना पड़े,

तब जीवन का आधा स्वाद ही समाप्त हो जाता है।

••• सुभाषचंद्र बोस जी •••

गाँधी : सत्य और प्रयोग

डॉ0 सूर्य नाथ सिंह
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
आर. एस. मोर कॉलेज , गोविन्दपुर

महात्मा गाँधी के लिए चौपारण का आंदोलन भारतीय समाज में उनका पहला बड़ा सत्याग्रह था जिसमें उन्होंने अपने सत्य और धर्म को व्यवहार की कसौटी पर परखने का अवसर पाया । गाँधी का 'धर्म' सतत् प्रयोग के क्रम में सतत् सीखते जाने की प्रक्रिया थी जहाँ सत्य कभी जड़ और अंतिम नहीं होता । वह उस नैतिकता का स्त्रोत था जिसे उन्होंने अपनी राजनीति का मूल आधार बनाया था । अपने छात्र जीवन से लेकर दक्षिण आफ्रीका के दिनों तक उन्होंने अपने धर्म और उसके सत्य को निजी आचार तथा सामाजिक व्यवहार में जाँचा और विकसित किया था चौपारण में बड़े पैमाने पर उन्होंने उन उपकरणों का प्रयोग किया जिन्हें अर्जित करने के लिए उन्हें यातनाएं और अपमान सहने पड़े थे । वे उपकरण मानवीय संकल्प और चिंतन के उस श्रेष्ठ धरातल पर दीक्षित हुए थे जहाँ पीड़ा या वैयक्तिक भाव के पार खड़ा होता है – उद्देश्य और मात्र उद्देश्य ।

स्वाधीनता प्राप्ति के लिए हर कीमत पर संघर्ष महात्मा गाँधी के लिए एक ऐसा स्वप्न सत्य था जो उन्हें अपने आंतरिक सत्य की शक्ति से उपलब्ध करना था । उनकी शक्ति थी भारत और पश्चिम की वे आदर्शोन्मुखी मानवतावादी धाराएं जहाँ से बूँद–बूँद लेकर उन्होंने ठेठ भारतीय समझ को आत्मस्थ किया था । यह समझ जितनी भावात्मक आध्यात्मिक थी उतनी ही कर्मगत व्यावहारिक । साइमन कमीशन या रॉलेट एक्ट का विरोध , नमक सत्यग्रह और 1942 ई0 में 'करो या मरो' का आह्वान सत्य को विचार बनाकर यथार्थ में हस्तक्षेप करने की सफलतम कोशिशें थीं । पूरे स्वाधीनता संघर्ष के दौरान गाँधी एक असंभव मनुष्य की तरह सदा प्रार्थना के क्षणों को जीते दिखते हैं ।

वे निरंतर सीखते रहे और इसीलिए उनको एक प्रक्रिया की भाँति देखा जाना चाहिए । जिस धर्म को गाँधी राजनीति के लिए नैतिकता के अर्थों में आवश्यक मानते थे , उस धर्म के विकृत बाहरी खोखलेपन का जब धर्म के नाम पर दुरूपयोग हुआ तो गाँधी ने धर्म को मात्र निजी विश्वास की चीज के तौर पर राजनीति से बहिष्कृत करने की बात की ।

कोरोना वायरस : मानसिक तनाव और अकेलापन

प्रकाश प्रसाद

मानोविज्ञान विभाग

'मनुष्य एक समाजिक प्राणी है' अर्थात् समाज में अंतःक्रिया करके ही प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता को पुरा करना तथा मानसिक एवं शारीरिक रूप से अपने को स्वस्थ्य रखता है । आधुनिक समय में भागती–दौड़ती जिन्दगी के बीच कोरोना वायरस नामक समस्या मानो जिन्दगी के पहिया को कस कर पकड़ लिया और इस ब्रेक के कारण जिन्दगी थम सी गई । इस बीच चिंता, डर, अकेलापन और अनिश्चितता का महौल बना हुआ है कोरोना वायरस के डर ने लोगों के मानसिक स्वस्थ्य पर प्रभाव डाला है । अचानक से स्कुल कॉलेज, बिजनेस बंद हो गए, बाहर नहीं जाना है और दिन भर कोरोना वायरस की खबरे देखनो है । इसका असर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ना स्वाभविक है । इससे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिलता है लेकिन ज्यादा स्ट्रेस, डिस्ट्रेस बन जाता है और इस तनाव का असर शरीर, दिमाग, व्यवाहर पर पड़ता है –

(क) शरीर पर असर – रक्त चाप में उतार–चढ़ाव, हृदय गति में परिवर्तन, थकान का अनुभाव, रोग–प्रतिरोधक क्षमता में कमी ।

(ख) भावनात्मक असर – चिड़चिड़ापन, गुस्सा, डर, उदासी ।

(ग) व्यवहार पर असर – नशीले पदार्थ का ज्यादा सेवन, ज्यादा टी वी देखना, चुप्पी या अकेलापना में रहना ।

उपर्युक्त तनाव से बाहर निकलना बहुत ही आवश्यक है । आधुनिक शोंधो से यह पता चलता है कि करीब 75 प्रतिशत रोगों का कारण तनाव होता है । इस अनिश्चितता के महौल में निम्नलिखित जीवन शैली को अपनाकर तनाव को कम कर सकते हैं । खबरों का ओवरड़ोज न लें, कोरोना वायरस से जुड़ी सही–गलत खबरो का प्रवाह अत्यधिक हो रहा इससे बचने की कोशिश करें । अपने दिनचर्या में व्यायम, योग, ध्यान को सम्मिलित करना चाहिए जो मन–शरीर को स्वास्थ्य रखता है । सब कुछ ठीक हो जायेगा इस प्रकार का सकारात्मक सोच मन में बना कर रखना आवश्यक है । नाकारात्मक विचारों को मन में आने नहीं दिया जाय । अपनी भावनाओं को न छुपायें उसे जाहिर होने दे । खाना, सोना, सुबह जागना समय पर ही जारी रखें ।

आरएस मोड़ को 'वन डिस्ट्रिक्ट, वन ग्रीन चैंपियन' अवार्ड

गोविंदपुर। भारत के उच्च शिक्षा मंत्रालय की इकाई महात्मा गांधी नेशनल काउंसिल ऑफ रूरल एजुकेशन (एमजीएनसीआरई) ने आरएस मोर कॉलेज को 'वन डिस्ट्रिक्ट, वन ग्रीन चैंपियन' अवार्ड से सम्मानित किया है। यह अवार्ड स्वच्छता एवं नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों की प्राप्ति के संदर्भ में उठाये गए बेहतरीन कदमों के लिए दिया गया है। झारखंड के मात्र 5 कॉलेजों को इस अवार्ड से नवाजा गया।

आरएस मोर कॉलेज को मिला 'वन डिस्ट्रिक्ट, वन ग्रीन चैंपियन' अवार्ड

Thu, 10 June 2021

द, गुरुवार, 10 जून, 2021

आरएस मोर कॉलेज को मिला ग्रीन चैंपियन अवार्ड

गोविंदपुर। उच्च शिक्षा मंत्रालय की इकाई महात्मा गांधी नेशनल काउंसिल ऑफ रूरल एजुकेशन ने आरएस मोर कॉलेज गोविंदपुर को "वन डिस्ट्रिक्ट, वन ग्रीन चैंपियन" अवार्ड के तहत स्वच्छता एवं नवीकरणीय उर्जा लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बेहतरीन कदमों के लिए ग्रीन चैंपियन अवार्ड से नवाजा है। झारखंड के मात्र 5 कॉलेजों समेत पूरे देश में कुल 400 उच्च शिक्षा संस्थानों को ये अवार्ड दिया गया है। प्राचार्य डॉ प्रवीण सिंह ने कहा कि महाविद्यालय की एनएसएस टीम में शामिल राष्ट्रीय सेवा योजना की समन्वयक डॉ रत्ना कुमार, स्टाफ मेंबर्स व राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने मेहनत कर महाविद्यालय का नाम रौशन किया है। मौके पर डॉ. राजेन्द्र प्रताप, प्रो सुभाष चन्द्र दा, प्रो मनोरंजन महतो, डॉ श्याम किशोर सिंह, डॉ अजित कुमार वर्णवाल, डॉ शबनम प्रवीण, डॉ अमित प्रसाद, डॉ सूर्यनाथ सिंह, प्रो त्रिपुरारी कुमार, प्रो प्रकाश कुमार प्रसाद, प्रो सत्य नारायण गोराई, प्रो विनोद कुमार एक्का, डॉ नीरा कुमारी, डॉ कुहेली बनर्जी, डॉ शुभ्रा प्रधान,प्रो रागिनी शर्मा, प्रो इकबाल अंसारी, मो शाकिर, प्रदीप महतो,

नई पत्र वार्ता || अपना राज्य

आर एस मोर कॉलेज में कोविड-19 के समय में स्वयं का विकास विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया

दैनिक भास्कर

आरएस मोर कॉलेज में स्वच्छता पखवाड़ा शुरू

पराक्रम दिवस पर आर० एस० मोर कॉलेज , गोविंदपुर परिवार ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व व कृतित्व को किया याद

आयोजन • पीके राय मेमोरियल कॉलेज में सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान पद्धति पर कार्यशाला

गुणात्मक क्षेत्रों का अध्ययन विज्ञान के मात्रात्मक क्षेत्रों से अधिक कठिन : वीसी

नये तथ्यों की खोज ही है शोध

गुणात्मक शोध के सारे आयाम मौजूद

गोविंदाचार्य ने की छात्रों से पर्यावरण संरक्षण की अपील, कहा

रोटी और रिश्ते के मामले में भारत एक राष्ट्र

आरएस मोर कॉलेज से साइकिल रैली रवाना

ग्रामीण स्वशासी इकाइयों से होगा झारखंड का विकासः डॉ अनिरुद्ध

आरएस मोर कॉलेज में संगोष्ठी का आयोजन

बंदिशें तोड़ कर आगे बढ़ना होगा : प्रॉक्टर

प्रभात खबर Sun, 08 March 2020 https://epaper.prabhatkhabar.com/c/49754303

दैनिक भास्कर

भागमभाग की जिंदगी को विराम देकर खुद का अवलोकन करें: डॉ एमके सिंह

कोविड-19 : योग, इम्युनिटी व हेल्दी लाइफस्टाइल विषयक वेबिनार का आयोजन

धनबाद 25-03-2021

विद्यार्थियों के लिए दृढ़ निश्चय जरूरी: डॉ प्रवीण

स्टार्टअप और रोजगार के अवसर विषय पर परिचर्चा

गोविंदपुर | प्रतिनिधि

आरएस मोर कॉलेज में बुधवार को स्टार्टअप और रोजगार के अवसर विषय पर कॉलेज के सभागार में परिचर्चा आयोजित की गई। परिचर्चा की शुरुआत करते हुए प्राचार्य डॉ. प्रवीण सिंह ने कहा कि स्टार्टअप देश को नया आयाम दे सकता है। आने वाले दिनों में स्टार्टअप इंडिया, देश के भविष्य के लिए स्टैंडअप इंडिया होगा।

धनबाद के अग्रणी स्टार्टअप मैनेजर सह सॉफ्टवेयर डेवलपर शान्तनु बनर्जी ने कहा कि छात्रों को स्टार्टअप के क्षेत्र में आगे आने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि स्टार्टअप में पूरी निष्ठा के साथ कड़ी मेहनत करें, तो सफलता जरूर मिलेगी। [illegible]इंड बैंक, गोविंदपुर के मैनेजर [illegible]शांक ठक्कर ने कहा कि स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य देश में स्टार्टअप्स और नए विचारों के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है। जिससे देश का आर्थिक विकास हो एवं बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हों।

प्राध्यापक डॉ. अमित प्रसाद ने कहा कि स्टार्टअप की दुनिया की सबसे बड़ी यूएसपी (काम करने का तरीका) इनकी विघटन और विविधीकरण की क्षमता है। परिचर्चा में डॉ. रत्ना कुमार, डॉ. अजित कुमार बर्णवाल, डॉ. सूर्यनाथ सिंह, डॉ. कुहेली बनर्जी, डॉ. नीना कुमारी, प्रो. त्रिपुरारी कुमार, प्रो. प्रकाश कुमार प्रसाद, प्रो. विनोद एक्का, प्रो. सत्यनारायण गोराई, इकबाल अंसारी, राकेश ठाकुर, राजकुमार पाल, स्नेहलता होरो, मो. शारिक, सुजीत मंडल, प्रदीप महतो एवं अन्य उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस पर आर० एस० मोर कॉलेज में कोविड-19 के समय में स्वयं का विकास विषयक व्याख्यान का आयोजन

धनबाद। शनिवार को आर0 एस0 मोर कॉलेज गोविंदपुर में अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस पर «कोविड -19 के समय मे स्वयं का विकास» विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान के मुख्य वक्ता आई0आई0टी /आई0एस0एम0 धनबाद के मैनेजमेंट विषय के रिटायर्ड प्रोफेसर प्रो0 (डॉ) प्रमोद पाठक थे। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य डॉ प्रवीण सिंह ने कहा कि लाकडाउन के बाद से लोगों की जिंदगियों में तनाव बढ़ गया है। इनमें कामकाजी युवा, छात्र व महिलाएं ज्यादा हैं।तनाव दूर करने के लिए अब योग और ध्यान का सहारा लेने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस एक विश्वव्यापी आंदोलन की भांति कार्य कर रहा है जो प्रसन्नता को मौलिक मानव अधिकार बनाये जाने हेतु जागरूकता प्रदान कर रहा है।प्रसन्नता के स्तर में देश में उत्तरोत्तर सुधार नहीं होने के कारण से भारत की अधिकतर आबादी तनावग्रसित है। संयुक्त राष्ट्र की %विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2019% के अनुसार, भारत खुशहाल देशों की सूची में पिछले साल के मुकाबले सात स्थान नीचे गिरकर 140वें स्थान पर पहुंच गया है. इस सूची में 156 देशों को शामिल किया गया है जिसमें फिनलैंड लगातार दूसरी बार शीर्ष पर है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आईआईटी/आइएसएम धनबाद के रिटायर्ड प्रोफेसर डॉ0 प्रमोद पाठक ने कहा कि कोविड के समय मे आज प्रतिरोधक क्षमता का विकास करने की जरूरत है। भय और तनाव से मुक्ति कोरोना से बचाव के लिए जरूरी है। भय और तनाव से मुक्त होकर कोरोना के बचाव के उपायों को अपनाकर हम दैनिक दिनचर्या में आगे विकास की ओर अग्रसारित हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन ने हमे अपने अंदर झांकने का अच्छा मौका दिया ।हमें अपने और अपनो के लिए कुछ समय निकालने की आवश्यकता है, कोई बड़े लक्ष्य की ओर बढ़ने की जरूरत है। कोरोना की वजह से जीवन शैली में परिवर्तन आए हैं। पृथ्वी के हर जीव जंतु प्राणी पर कोरोना महामारी का प्रभाव देखने को मिला है। ऐसे में उनकी जीवनशैली में अनेक परिवर्तन भी आए हैं। भौगोलिक परिवर्तन हो या मानवीय जीवन संबंधित परिवर्तन कोरोना से सभी लोग प्रभावित हुए हैं, जिसका असर मानवीय जीवन शैली परिवर्तन में अधिक दिखाई दे रहा है। इससे जीवन काफी प्रभावित हुआ है। इस कोरोना संक्रमण के कारण विशेष रूप से विद्यार्थी जीवन प्रभावित हुआ है, जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर ही नहीं बल्कि उन सभी व्यक्तियों पर रहा है जो कि शारीरिक क्रियाओं में सम्मिलित हैं। एक मात्र शारीरिक जीवन ही नहीं इसमें मानसिक तनाव भी बढ़ रहा है। क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर होता है ऐसा कहा जाता है इसका एक मात्र उपाय कि हमें स्वयं को किसी ना किसी कार्य में व्यस्त रखना चाहिए। सिर्फ विद्यार्थी जीवन के लिए ही नहीं आम व्यक्तियों के लिए भी जरूरी है कोई भी कार्य करते रहे और अपने बच्चे को भी खेल खेल में ऐसे कार्य में व्यस्त कर दें, जिससे उसका शारीरिक ही नहीं मानसिक विकास भी हो। प्राणी जाति के लिए अच्छा होगा कि इस दौरान समय की कीमत को पहचाने। जो हम समय चाहते हैं तब मिलता नहीं अब मिल रहा है तो इस समय का सदुपयोग ऐसे कार्य करने में करें, जिससे हमारा मानसिक व शारीरिक रूप से विकास नियमित रूप से जारी रहे। बुरा नहीं अच्छा समय समझ कर अपना विकास करें और दूसरे लोगों को भी इसकी प्रेरणा दें। उन्होंने इस अवसर पर महाविद्यालय पुस्तकालय को किताबों का भेंट भी दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ नीना कुमारी एवं प्रो0 त्रिपुरारी कुमार ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रोफेसर-इन-चार्ज डॉ राजेन्द्र प्रताप, डॉ रत्ना कुमार, डॉ अजित कुमार बर्णवाल, प्रो0 सुभाष दा, प्रो0 मनोरंजन महतो, डॉ शबनम प्रवीण, डॉ सूर्यनाथ सिंह, डॉ श्याम किशोर सिंह, डॉ0 कुहेली बनर्जी, डॉ नीना कुमारी, प्रो0 त्रिपुरारी कुमार, प्रो0 विनोद कुमार एक्का , प्रो0 सत्यनारायण गोराई, प्रो0 प्रकाश प्रसाद, प्रो0 अमित प्रसाद,डॉ शुभ्रा प्रधान, प्रो0 रागिनी शर्मा, प्रो0 स्नेहलता होरो, प्रो0 पूजा कुमारी, प्रो0 [illegible] अंसारी, प्रो0 राकेश ठाकुर, प्रो0 राजकुमार पाल,कॉलेज प्रधान [illegible] मो0 शारिक, सुजीत मंडल, प्रदीप महतो, रतन टोप्पो, मनोज [illegible] अन्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

Meaning of True Education

Tripurari Kumar

Assistant Professor

Dept of Economics

R.S.More College, Govindpur

True education is a wide and comprehensive concept. It encompasses all that goes to make an individual in the real sense of the term. True education builds us not only from without but also from within. The purpose of education doesn't stop with the acquisition of certificates , degrees or securing some handsome employment. The purpose of education goes beyond this absolutely limited Sphere. True Education brings sense of values, an urge for serving the society, working for greater good of humanity which we are part and parcel of. The purpose of true education is to enlarge our vision of the milieu in which we go, to widen our concept of true development which is certainly inclusive development meaning consisting development for all, to make us capable of responding to the needs and aspirations of our fellow brothers and sisters who directly or indirectly contribute to our growth and development.

Defining the aim of the education the great thinker Beetle had written "The true aim of education should be to teach us rather how to think than what to think- rather to improve our minds so as to enable us to think for ourselves than to load the memory with the thoughts of other men". To put it short "An educated man is one who has the right loves and hatreds".

True education transcends the realm of knowledge and goes very deep into the heart, the dwelling place of wisdom and the spring of values and relationships.

Shrimad Bhagwat Geeta is a great lesson on education. In this Book Arjuna is the pupil whom Shri Krishna educates. He gives Arjuna no set of information but asks him to know himself and his duty Swadharma. The dharma of our action is a consequence of our nature which is to be realized in our relationship with people around us. The true aim of education is to awaken in the individual the sense of his being a part of the society. And the true Dharma lies in serving the society which he or she is part of.

Today most of the so called educated are satisfied after getting university degrees and a lucrative Job. The result of which is the society which consists of lop-sided individuals and persons whose personalities are far from complete because their activities are confined to meeting their selfish ends and the qualities of service and sacrifice have no place in the scheme of their lives.

The value which education tends to develop do not exist outside of us but they exist within us. We need to discover that.

True education is the most potent and effective tool to redeem our lives, to bring about development in true sense. It can bring economic advancement, cultural regeneration, Secular and democratic society and scientific approach.

To make our education worthwhile or to prove worthy of the salt of education we have to bring out the best within us and help redemption of ourselves and the society.

HIGHER EDUCATION IN INDIA : ISSUES AND OPPORTUNITIES

DR. AMIT PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR

DEPARTMENT OF COMMERCE ,

R.S.MORE COLLEGE, GOVINDPUR .

Abstract

Higher Education has been finding it difficult to meet the issues of unplanned expansion, educated unemployment, uneven growth, commercialization of education, financial crises, teacher burn out and the digital divide of quantity Vs quality, equity Vs excellence, creativity Vs conformity, which are posing continuous threats to higher education. At this Juncture, the new education system should be able to teach every individual how to classify and reclassify information, how to look at problems from new perspectives and finally how to teach himself/herself. Teachers are the best trained manpower for a nation. Because, they produce Technologists, Scientists, Doctors, Engineers, Policy makers, Businessmen and Teachers. Therefore, through quality assured training programs it has become necessary to produce competent professionals to meet the ever – growing demands of liberalization and globalization. Hence, the emerging Indian society needs to make the system of education innovative and futuristic according to the changing demands of the modern Indian Society. The existing education should be improved according to the needs of the time. It has to fulfill the demands of one's own country and the changing scenario of the world. It must be competitive and co – operative. Looking into these factors the education from primary to higher and even technical education needs to be improved from time to time, to transform the capacity of the people's vision for society. Every system of education aims at moulding the individuals to play their roles in the society most effectively.

INTRODUCTION

India's higher education system is the world's third largest in terms of students, next to China and the United States. In future, India will be one of the largest education hubs. India's Higher Education sector has witnessed a tremendous increase in the number of Universities/University level Institutions & Colleges since independence. The 'Right to Education Act' which stipulates compulsory and free education to all children within the age groups of 6-14 years, has brought about a revolution in the education system of the country with statistics revealing a staggering enrolment in schools over the last four years. The involvement of private sector in higher education has seen drastic changes in the field. Today over 60% of higher education institutions in India are promoted by the private sector. This has accelerated establishment of institutes which have originated over the last decade making India home to the largest number of Higher Education institutions in the world.

The Indian higher education must teach every individual how to classify and reclassify information, how to look at problems from new direction and finally how to teach himself/herself. Teachers are the best trained manpower for a nation. Because, they produce technologists, scientists, doctors, engineers, policy makers, businessmen and teachers. Therefore, through quality assured training programs it has become necessary to produce competent professionals to meet the ever – growing demands of liberalization and globalization. Every system of education aims at moulding the individuals to play their roles in the society most effectively.

Issues in Indian Higher Education

The Report of National Commission of Excellence in Education (1983) in the United States warns that the "educational foundations of our society are presently being eroded by a rising tide of mediocrity that threatens the very future of a nation and a people". In the context of multinational entering into the field of education, quality assurance has become a necessity. India will have to decide on what knowledge and /or skills would be most helpful to prepare students for encountering the continuing change. The student of today learning a specific content of information will find to his amazement that he is not prepared to face the life which he has to live for the next five decades because the knowledge furnished with, has become

outdated long back. The coming few decades will be miracles in space craft, satellites, internets and others offshoots of scientific enquiries. The recent developments in communication technologies have helped to cross the barriers of time and distance and those borders have become porous and the sky open. The methods of teaching through lectures will have to be supplemented with the methods that will focus on self study, personal consultation between teachers and students and informative sessions of seminars and workshops. In engineering the indian society, knowledge creation, exchange, networking and highest utilization have become most vital for the advancement of higher education. India needs to make the system of education innovative and futuristic in order to respond to the changing demands of the modern society.

Opportunities

India is a large country, with an estimated population of young people aged between 18 to 23 years to be around 150 millions. The sheer size of the market offers huge opportunities for development of the higher education sector in India. India now boasts of having more than 33,000 colleges and Above 659 universities, which has been quite a remarkable growth during the last six decades. Indian higher education system is growing very fast irrespective of various challenges but there is no reason that these challenges cannot be overcome. With the help of new-age learning tools, it is easy for a country like India to overcome these problems and bring a paradigm shift in the country's higher education sector. With such a vibrant country with huge population properly educated, the possibilities are endless. If knowledge is imparted using advanced digital teaching and learning tools, and society is made aware of where we are currently lagging behind, our country can easily emerge as one of the most developed nations in the world. There are opportunities for strategic engagement and capacity building in higher education leadership and management at the state level. There are opportunities for India to collaborate at the national and international level on areas of systemic reform including quality assurance, international credit recognition, and unified national qualifications framework. Equality of educational opportunity in higher education is considered essential because higher education is a powerful tool for reducing or eliminating income and wealth disparities. The idea of equalizing educational opportunities also lies in the fact that the ability to profit by higher education is spread among all classes of people.

Suggestions

Improving the System of Higher Education:

- There is a need to implement innovative and transformational approach form primary to higher education level to make Indian educational system globally more relevant and competitive.
- Higher educational institutes need to improve quality and reputation.
- There should be a good infrastructure of colleges and universities which may attract the students.
- Government must promote collaboration between Indian higher education institutes and top International institutes and also generates linkage between national research laboratories and research centers of top institutions for better quality and collaborative research.
- Universities and colleges in both public and private must be away from political affiliations.
- Favoritism, money making process should be out of the education system.
- There should be a multidisciplinary approach in higher education so that students' knowledge may not be restricted only up to his own subjects.

Conclusion

Education is a process by which a person's body, mind and character are formed and strengthened. It is bringing of head, heart and mind together and thus enabling a person to develop an all round personality identifying the best in him or her. Higher education in India has expanded very rapidly in the last six decades after independence yet, it is not equally accessible to all. This has not only excluded a large section of the population from contributing to the development of the country fully but it has also prevented them from utilising the benefits of whatever development have taken place for the benefit of the people. No doubt India is facing

various challenges in higher education but to tackle these challenges and to boost higher education is utmost important. India is a country of huge human resource potential, and to utilise this potential properly is the issue which needs to be discussed. Opportunities are available but how to get benefits from these opportunities and how to make them accessible to others is a matter of concern. In order to sustain the rate of growth, there is need to increase the number of institutes and also the quality of higher education in India. To reach and achieve the future requirements there is an urgent need to relook at the Financial Resources, Access and Equity, Quality Standards, Relevance, infrastructure and at the end the Responsiveness. After independence, there has been tremendous increase in institutions of higher learning in all disciplines. India today, is one of the fastest developing countries of the world. However, it has to create more opportunities for increasing the number of institutes and the quality of higher education to achieve the future requirements. Given the present situation of higher education, there has been significant improvement in the recent years. The investment in higher education, which has more potentiality, should be motivated to provide better higher education system in the country.

My First Day in College

Dr. Shabnam Parveen
Assistant professor, Department of English
R. S. More College, Govindpur, Dhanbad

My First Day in College (Poem)

As I enter the 'institution' of Hope and Courage
I shudder to think of the struggles I met
Just to be here
'I want to go to college to study',
I had told my mother-in-law,
Faced the scorn of my sister-in-law,
And the frail support from my husband
Had sparked a sense of strength, [1]
To fight for my right, at length.
Now that I am here, I try my best
To find my hope, inspirations and aspirations
Amid the dusty roads I travel by,
The rusty staircase
leading me up to the classroom,
The chalky blackboard,
The 'cornered' spider-web
spread across a thousand dreams peopling the alley
Of the college,
As I see it on my first day,
Hopeless yet hopeful...

Time Management- A Tool For Success

Dr. Kuhali Banerjee

Assistant professor, Department of Commerce

R. S. More College, Govindpur, lDhanbad

We all have been taught by our childhood teachers that "Time and Tide waits for no one". Our parents used to say time is very precious so do not waste it. Gradually as we grow up and try to manage our routine life, we understand that it's truly precious but, by that time we also realize that many things have been lost, too many works remain pending, some relationships are lost, decisions still lag behind and many such things that make us stand in a lost position. All this happens because time lost is irreversible. Once it is lost it cannot be reverted. So time is very important and we all must learn to manage it to make our life better.

Time management is all about managing time effectively. It involves allocating right time to the right activity, assigning specific time slots to the activities on priority basis, assessing time availability and then making best use of that limited time. To make it effective one must prepare a "Task Plan" and "To Do" list. This practice not only makes an individual punctual, organized and disciplined but also boosts an individual's morale and makes him confident.

Time management plays a pivotal role in making individual's life well organized in every field. Whether he or she is an employee, student, a monk or any homemaker, learning time management is equally important for all. To follow it effectively one must know to plan their activities according to the availability of time. However, planning differ for different individuals. In general, few planning tips to manage our life effectively can be summarized under the following heads.

Know our target well: It is always better to discuss things initially than to cut a sorry figure later on. So, first of all we must set our targets and must discuss with our seniors, boss or our teachers to avoid unrealistic and unmanageable targets and set the actual one.

Allocating time slots: Once target is set, one must allocate the work according to the availability of time. Time slots must be allotted to individual task in order to complete the work assigned in time.

Organizing yourself: We must be very careful about our documents and notes and must place it properly to avoid mismanagement in need.

*Loyalty towards the organization and work: C*oncentrating in our own work and studies should be our prior objective rather than wasting time in other activities that can hamper our targets. Performing our job honestly creates a positive position and good impact on our performance.

Planning the things in advance: Jotting down the task in advance is very essential to achieve our targets. To do this, a list must be prepared in advance regarding what "to do" and "not to do".

Punctuality: Time management without punctuality is impossible. Presence in time and doing the work in time is the only key note to manage time effectively.

Avoid pending work: Lot many pending work will result in failure. So achieving the targets in time must be practiced to achieve success.

Whenever we find successful people around us either we feel good and try to be like them or we feel depressed and loose hope. Choosing the positive option is always preferable. Losing hope can never be a good option. Learning time management and practicing it in our day to day life can make any individual a successful person in any field of life.

बुनियादी शिक्षा : एक विमष

डॉ0 अजीत कुमार वर्णवाल

सहायक प्राध्यापक, दर्षनषास्त्र विभाग

आर. एस. मोर कॉलेज, गोविन्दपुर, धनबाद

अरस्तू ने कहा है "मनुश्य एक सामाजिक प्राणी है।" इस परिभाशा में 'मनुश्य' का प्राणी ही कहा गया है। मनुश्य की भी जैविक रूप से प्राणियों की तरह ही उत्पत्ति, आवष्यकता, विकास और अन्त होता है। किन्तु प्रष्न यह है कि वह क्या है जो मनुश्य को अन्य पषुओं से अलग करता है? वह है 'विवक' या 'शिक्षा' जिसके कारण मनुश्य को 'मनुश्य' नाम दिया गया है। कान्ट ने कहा है "मनुश्य शिक्षा से ही मनुश्य बन सकता है। शिक्षा जो बनाती है, मनुश्य वही बनता है।"[1] मोसेस हैदस ने कहा है "....शिक्षा मनुश्य का सबसे महत्वपूर्ण उपक्रम है।"[2] मनुश्य इसी गुण के कारण आदि काल से प्रकृति को जानने का प्रयास करता रहा है तथा वह जीने की कला, नियम, सभ्यता एवं संस्कृति का विकास कर पाया है।

मनुश्य के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए 'शिक्षा' ही एकमात्र अस्त्र है। शिक्षा के कई रूप हैं यथा–षारीरिक शिक्षा, मानसिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, विज्ञान–संबंधी शिक्षा आदि। आधुनिक समय में शिक्षा का जो रूप देखने को मिलता है उसमें व्यावसायिक शिक्षा और विज्ञान–संबंधी शिक्षा ही महत्वपूर्ण है। इसमें संदेह नहीं कि विज्ञान ने अत्यधिक प्रगति कर ली है। ऐसी शिक्षा से मनुश्य ने अनेकानेक भौतिक सुख–सुविधायें प्राप्त कर ली हैं। पूरा विष्व सिमट कर एक गाव में तब्दील हो गया है। घर बैठे हम इंटरनेट और टी.वी. के माध्यम से पूरे विष्व की जानकारी हासिल कर सकते हैं। विष्व के किसी भी कोने में बैठे अपने रिष्तेदारों, मित्रों से बातचीत कर सकते हैं। बहुत ही कम समय में हम समन्दर पार की यात्रा कर सकते हैं। मनुश्य की बहुत सी समस्याओं का समाधान आधुनिक शिक्षा ने कर दिया है।

किन्तु गौर करने पर हम पाते हैं कि आधुनिक शिक्षा ने मनुश्य को मषीन बना दिया है। ऐसा मषीन जो अधिक–से–अधिक धन एवं भौतिक सुख–सुविधाओं का उत्पादन करे। जिस प्रकार मषीन चेतनाविहीन होता है उसी प्रकार आधुनिक शिक्षा ने मनुश्य को भी चेतनाविहीन बना दिया है। मनुश्य में मनुश्य के लिए चेतना एवं संवेदना समाप्त हो चुकी है।

आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर लोग डॉक्टर, इंजीनियर, डिप्टी कलक्टर, बी.डी.ओ., सी.ओ., एस.पी., डी.एस.पी., प्रबंधक आदि बन रहे हैं और इन पदों पर प्रतिश्ठित होकर बहुत धन (वैध या अवैध) इकट्ठा कर रहे हैं।

इंजीनियर ऐसे पुल, सड़क, भवन आदि बना रहे हैं जिसकी आयु दो या तीन महीने से अधिक नहीं होती। मंत्री ऐसी योजना बना रहे हैं जो दिखाने मात्र के लिए जनता के हित के लिए होती है। एस.पी, डी.एस.पी., इंस्पेक्टर आदि वैसे लोगों को गिरफ्तार करते हैं जो उन्हें रिष्वत नहीं देते हैं और वैसे अपराधी को बचाते या छोड. देते हैं जो उन्हें रिष्वत देते हैं। सरकारी दफतरों में वैध कार्य करवाने के लिए घूस देना पड़ता है अन्यथा सरल कार्य के लिए भी महीनों दफतर के चक्कर लगाने पर भी वह पूरा नहीं होता है। मसलन यदि बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र बनवाना हो या जाति प्रमाण पत्र बनवाना हो या आवासीय प्रमाण पत्र या डाइविंग लाइसेंस ही बनवाना हो, बिना पैसे दिये आवेदन रिसीव ही नहीं किया जाता है। सरकार गरीबों के कल्याण के लिए योजना बनाती है, भारी–भरकम राषि का आबंटन भी करती है, योजनानुसार सरकारी कागज पर कार्य संपन्न होने का प्रमाण भी प्रस्तुत किया जाता है किन्तु जनता के लिए धरातल पर योजनानुसार कार्य होता नहीं है। इसका कारण यह है कि योजना की राषि का अंतिम जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुँचने से पहले ही मंत्री, अफसर, इंजीनियर, ठेकेदार आदि के बोच पूरी ईमानदारी के साथ बंदरबाट कर लिया जाता है। जनता के धन की चोरी कर ली जाती है और उसे स्विस बैंक में जमा करा लिया जाता है। यहाँ तक कि यदि तहकीकात में किसी मंत्री या अफसर के नाम उस अवैध धन का पता चल भी जाता है तो भी उन्हें षर्म नहीं आती है और न वे उस चोरी के धन को सरकारी खजाने में वापस ही करते हैं। कुल मिलाकर सरकारी कार्य एवं योजना सरकारी कागज पर ठोस होते हैं और जमीन पर बिल्कुल खोखले।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षा लोगों में भ्रश्ट मानसिकता पैदा कर रही है। भ्रश्ट मानसिकता के कारण ही मनुश्य 'मनुश्य' के प्रति चेतनाविहीन हो गया है। हर तरफ भ्रश्टाचार, घूस, मिलावट, घोटाले, ब्लात्कार, लूट, अपहरण, हत्या, झूठ, ठगी, विद्वेश का साम्राज्य है।

गरीबों के बच्चे पढ़–लिख कर जागरूक न हो जायें इसलिए सरकारी स्कूल, कॉलेजों की स्थिति बद से बदतर बना दी गयी है। स्कूल है तो भवन नहीं है, भवन है तो षिक्षक नहीं हैं और यदि दोनों हैं तो षिक्षकों को मतगणना, पषुगणना, जातिगणना, जनगणना, मध्यान्ह भोजन बनाने आदि अषैक्षणिक कार्यों में लगा दिया जाता है जिससे पढ़ाई–लिखाई बाधित होती है। ऐसे स्कूलों में पढ़ाई का स्तर इतना निम्न हो गया है कि बच्चे बड़े होकर बेरोजगारों की फौज

का हिस्सा बन रहे हैं। फलतः उनकी समस्यायें ज्यों–की–त्यों बनी रहती हैं। पीड़ित जनता चिंतित और चिड़चिड़ी हो जाती है। जब उनकी भूख की सीमा जवाब देने लगती है, सामाजिक न्याय के लिए कानूनी मदद नहीं मिलती है, उसके जमीन, बरतन, गहने आदि बेईमानी करके साहूकार और जमींदार हड़प लेते हैं, तो कुछ महत्वाकांक्षी एवं धत्त लोग अपने निजी, राजनीतिक, आर्थिक या अन्य लाभ क लिए उन्हें गुमराह कर इस्तेमाल करते हैं। फलतः वे उग्रवादी या आतंकवादी बना दिये जाते हैं।

मनुश्य एक विवेकषील प्राणी है। जिस प्राणी में 'विवेक' का अभाव है वह पषु है। विष्व की जितनी भी समस्यायें हैं उनका अंतिम कारण विवेकहीन होना या अशिक्षा है। अशिक्षा या अविवेक के कारण ही मनुश्य की पाषविक वृत्तियाँ सुदृढ़ होती चली गयीं। "खाओ, पीओ और मौज करो" की प्रवृत्तियाँ पषुओं की हैं। पषु अपनी भूख–प्यास की तृप्ति के लिए अन्य प्राणियों पर हमला करते हैं तथा उनके भूख–प्यास की चिन्ता नहीं करते क्योंकि उनमे 'विवेक' का अभाव है।

जिनके पास षक्ति है वे अन्य मनुश्यों के अधिकारों का हनन कर "खाओ, पीओ और मौज करो" जैसी पाषविक प्रवृत्तियों के वषीभूत होकर स्वार्थी हो गये हैं। अविवेक और तृश्णा के कारण लोग केवल अपने सुख की प्राप्ति के लिए आम जन के हितों की बलि देकर निम्नतर पाषविक कर्मो को करते हैं।

आधुनिक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम में एवं महंगी होने के कारण सभी लोगों के लिए सुलभ नहीं हो सकतो है। इसलिए इसका लाभ कुछेक लोग ही उठाते हैं वह भी स्वार्थपरक लाभ। महात्मा गांधी ने कहा है "विदेषी भाशा द्वारा शिक्षा पाने में जो असह्य बोझ दिमाग पर पड़ता है वह केवल हमारे बच्चे ही उठा सकते हैं, उसकी कीमत उन्हें चुकानी ही पड़ती है। वे दूसरा बोझ उठाने के लायक नहीं रह जाते। इससे हमारे ग्रेज्युएट अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं। उनम खोज की षक्ति, विचार करने की ताकत, साहस, धीरज, बहादुरी, निडरता आदि गुण बहुत क्षीण हो जाते हैं। इससे हम नयी योजनाएँ नहीं बना सकते। यदि बनाते हैं तो उन्हें पूरा नहीं कर सकते। कुछ लोग, जिनमें उपयुक्त गुण पाये जाते हैं, अकाल मृत्यु के षिकार हो जाते हैं।....अंग्रेजी शिक्षा पाये हुए हम लोग इस नुकसान का अंदाज नहीं लगा सकते। यदि हम अंदाज लगा सकें कि सामान्य लोगों पर हमने कितना कम असर डाला है, तो उसका कुछ ख्याल हो सकता है।"[3]

"माँ के दूध के साथ जो संस्कार मिलते हैं और जो मीठे षब्द सुनायी देते हैं, उनके और पाठषाला के बीच जो मेल होना चाहिए, वह विदेषी भाशा द्वारा शिक्षा लेने से टूट जाता है। हम ऐसी शिक्षा के षिकार होकर मातृद्रोह करते हैं। विदेषी भाशा द्वारा मिलने वाली शिक्षा की हानि यहीं नहीं रुकती। षिक्षित वर्ग और सामान्य जनता क बीच भेद पड़ जाता है। हम सामान्य जनता को नहीं पहचानते हैं। सामान्य जनता हमें नहीं जानती है। वह हमें साहब समझ बैठती है और हमसे डरती है तथा वह हम पर भरोसा नहीं करती है। यह रुकावट पैदा हो जाने से राश्ट्र का प्रवाह रुक गया है।"[4] इसलिए ऐसी शिक्षा से देष का विकास और कल्याण कदापि नहीं हो सकता। अतः शिक्षा का माध्यम खासकर प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाशा ही होनी चाहिए।

अब प्रष्न यह है कि मनुश्य को कैसी शिक्षा दी जानी चाहिए? वास्तव में शिक्षा का प्रथम उद्देष्य यह है कि वह मनुश्य को 'मनुश्य' बनाये। महात्मा गांधी ने कहा है कि "मनुश्य न तो कोरी बुद्धि है, न स्थूल षरीर है और न केवल हृदय या आत्मा ही है। संपूर्ण मनुश्य के निर्माण के लिए तीनों के उचित और एकरस मेल की जरूरत है और यही सच्ची शिक्षा है।"[5] उन्होंने पुनः कहा है कि "बुनियादी शिक्षा का उद्देष्य दस्तकारी के माध्यम से बालकों को षारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास करना है।"[6] गांधीजी ने कहा है कि "सबसे पहले बच्चों को उपयोगी उद्योग सिखायें और उसके द्वारा उनकी षारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक षक्तियों का विकास सिद्ध करें।"[7]

आधुनिक शिक्षा में षारीरिक और बौद्धिक शिक्षा पर तो बल दिया जाता है किन्तु आध्यात्मिक शिक्षा या नैतिक शिक्षा को गौण कर दिया जाता है। इसीलिए आधुनिक मनुश्य ने भौतिक एवं मानसिक रूप से तो बहुत प्रगति कर ली है किन्तु नैतिक रूप से उसका पतन हो गया है। इसीलिए सर्वत्र भ्रश्टाचार का बोलबाला है और देष की बहुसंख्यक जनता विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रसित है। वास्तव में 'बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय' की नीति को दृश्टि में रखकर मनुश्य को षारीरिक, बौद्धिक और नैतिक शिक्षा देने पर ही देष का समग्र विकास हो सकता है और भारत देष विष्व का मार्गदर्षक बन सकता है। इस हेतु महात्मा गांधी द्वारा सुझाये गये बुनियादी शिक्षा ही उपयोगी है।

Mental Health and its Importance

Ragini Sharma

Assistant professor

R.S.More College, Govindpur, Dhanbad

Mental health includes our emotional, psychological, and social well-being. It affects how we think, feel, and act as we cope with life. It also helps determine how we handle stress, relate to others, and make choices. Mental health is important at every stage of life, from childhood and adolescence through adulthood and aging.

In 1959 WHO Expert committee on Mental health reviewed the various definitions of mental health and observed that mental health is influenced by both – biological and social factors. It is not a static condition but subject to variations and fluctuations in degree. It is the capacity in an individual to form harmonious relations with others and to contribute constructively to changes in his/her social and physical environment .Fitness of mental health is an important factor because it can help you to

- Cope with the stresses of life
- Be physically healthy
- Have good relationships

- Make meaningful contributions to your community
- Work productively
- Realize your full potential

However, mental health of children is much more important than that of the physical health. Mental fitness makes children more useful person in the world and also makes them well equipped physically, socially and morally. Your mental health is also important because it can affect your physical health. For example, mental disorders can raise your risk for physical health problems such as stroke, type 2 diabetes, and other diseases .There are many different factors that can affect one's mental health, including

- Biological factors, such as genes or brain chemistry
- Life experiences, such as trauma or abuse
- Family history of mental health problems
- Your lifestyle, such as diet, physical activity, and substance use

You can also improve your mental health by taking steps such as doing meditation, using relaxation techniques, and practicing gratitude. When it comes to your emotions, it can be hard to know what is normal and what is not. There are warning signs that you may have a mental health problem, including

- A change in your eating or sleeping habits
- Withdrawing from the people and activities you enjoy
- Having low or no energy
- Feeling numb
- Having unexplained aches and pains
- Feeling helpless or hopeless
- Smoking, drinking, or using drugs more than usual
- Feeling unusually confused, forgetful, angry, upset, worried, or scared
- Having severe mood swings that cause problems in your relationships
- Having thoughts and memories that you can't get out of your head
- Hearing voices or believing things that are not true
- Thinking of harming yourself or others
- Not being able to perform daily tasks like taking care of your kids or getting to work or school

Mental health is the health of the personality as a whole and the most important function of education and schools/colleges is to secure the mental health of boys and girls. These are some of the tips with the help of which you can prevent yourself and your dear ones from suffering from any kind of mental illness.

- Value yourself
- Take care of your body
- Surround yourself with good people
- Give yourself time
- Learn how to deal with stress
- Quite your mind
- Set realistic goals
- Break up the monotony
- Avoid alcohol and other drugs
- Get help when you need it

Improving mental health in schools/colleges has a number of benefits – a higher rate of teacher retention, increasing levels of achievement for students and lower dropout rates for students etc. to name a few. Focusing on the need for improving mental health in schools is just the start. Looking after our mental health can begin at school (or at home) but should be a part of all aspects of our lives. Teaching stress reduction techniques, removing the stigma around mental health with open discussions on these topics, prioritizing wellness by ensuring we get sleep, adopting a growth mind-set towards learning and teaching, focusing on gratitude and having clear boundaries between school/college and the rest of our lives can help to improve mental health in our schools/colleges for students and teachers alike.

Srinivasa Ramanujan

Iqbal Ansari

Department of Mathematics

R. S. More College, Govindpur

From 22nd December 1887 to 26th April 1920 lived in India an Indian mathematician during the british rule. He had almost no formal training in pure mathematics but he made substantial contributions to mathematical analysis, number theory, infinite series and continued fractions. Ramanujan worked extraordinarily on things that were too novel, things which could not be understood by everyone. Seeking mathematicians who could better understand his work, he wrote to the mathematician G.H.Hardy at the University of Cambridge, England, in 1913. Hardy at once recognized his work to be extraordinary and arranged for his travel to Cambridge. In his notes Hardy commented that Ramanujan had produced groundbreaking new theorems. During his short life Ramanujan independently compiled nearly 3,900 results (mostly identities and equations) many were completely novel, his original and highly unconventional results such as the Ramanujan Prime and the Ramanujan theta function, partition formulae and mock theta functions which opened entire new areas of work and vast amount of further research. By 1904 Ramanujan had begun to undertake deep research. He investigated the series and calculated Eulers costant to 15 decimal places. Ramanujan was deeply religious and united spirituality and mathematics. For him zero represented the Absolute Reality. An intuitive mathematical genius Ramanujan's discoveries have influenced several areas of mathematics, but he is probably most famous for his contributions to number theory and the infinite series.

ग़ज़ल

ऐ ख़ुदा मुझ को बचा ले ज़ुल्म की ज़ंजीर से
थक चुका हूँ, मिट रहा हूँ, वक़्त की तहरीर से।

बिक रहा है दीन-ओ-ईमान वक़्त के बाजार में
बेबसी का रंग छलका वक़्त की तस्वीर से।

हौसला अब भी जवाँ है आज़मा के देख लो
तुझ को शिकवा होगा एक दिन अपनी ही तक़दीर से।

आप अपने वास्ते सारा चमन ले जाइये इतराइये
मैं वाबिस्ता हूँ अब खुशबुए आलमगीर से।

झूट, मक्कारी, दग़ा का खुशनुमा है पैरहन
बच के चलिये अब ज़रा धोके की इस शमशीर से।

मैं भी इन्सां हूँ तो होंगी मुझ से भी कोताहियाँ
कौन बच पाया भला क़िस्मत की इस तहरीर से।

बंद मयखाना है सब जाइये शारिक़ मियाँ
घर का रस्ता पूछिए जाते हुए रहगीर से।

मो0 शारिक़
प्रधान सहायक

غزل

اے خدا مجھ کو بچا لے ظلم کی زنجیر سے
تھک چکا ہوں ، مٹ رہا ہوں ، وقت کی تحریر سے

بک رہا ہے دین و ایماں وقت کے بازار میں
بے بسی کا رنگ چھلکا وقت کی تصویر سے

حوصلہ اب بھی جواں ہیں آزما کے دیکھ لو
تجھکو شکوہ ہوگا اک دن اپنی ہی تقدیر سے

آپ اپنے واسطے سارا چمن لے جائے اِترائے
میں وابستہ ہوں اب خوشبوئے عالمگیر سے

جھوٹ ، مکاری ، دغا کا خوش نما ہے پیرہن
بچ کے چلئے اب ذرا دھوکے کی اس شمشیر سے

میں بھی انساں ہوں تو ہونگی مجھ سے بھی کوتاہیاں
کون بچ پایا بھلا قسمت کی اس تحریر سے

بند میخانے ہیں سب، جائے شارقؔ میاں
گھر کا رستہ پوچھئے جاتے ہوئے رہگیر سے

محمد شارقؔ
ہیڈ اسسٹنٹ، آر۔ایس۔مور کالج
گوبند پور، دھنباد

“पर्यावरण असंतुलन बढती जनसंख्या एक मूल कारण”

देश की आजादी का 74वा वर्षगाठ 15 अगस्त 2021 को सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाया गया | हमारा देश आजादी के 74वे वर्ष को पारकर 75वे वर्ष में प्रवेश किया | इस प्रकार यह वर्ष अमृत वर्ष भी हैं | इन 74 वर्षो में हमारे देश ने विभिन्न क्षेत्रो में काफी प्रगति किया हैं | जनसंख्या में तो हमारे देश ने बेतहासा प्रगति किया हैं , जिसका प्रभाव पर्यावरण पर गहरा पड़ा हैं |

पर्यावरण हैं क्या ? सर्वप्रथम हम पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ जानने का प्रयास करते हैं | पर्यावरण मूलतः दो शब्दों से बना हैं ‘ परी + आवरण ‘ | ‘परी’ का अर्थ चारो ओर ओर ‘आवरण’ का अर्थ अच्छादित होता हैं, अर्थात जो हमारे चारो ओर अच्छादित हो | जैसे हवा, मिट्टी, जल, पेड़-पौधे, जीव-जंतु , नदी-नाले, पहाड़, झील, झरना , ये सब पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं |

जनसंख्या वृधि की जानकारी हमे इन आकड़ो से मिल जाती है कि 1947 में आजादी के समय भारत की जनसंख्या 36 करोड़ 10 लाख 88 हजार के करीब थी, वही वेबसाइट वोल्र्डोमीटर के अनुसार 2021 में भारत की जनसंख्या बढ़कर 139 करोड़ हो चुकी हैं , जबकि विश्व की जनसंख्या 7.9 बिलियन यानि लगभग 767.35 करोड़ |

बढती जनसंख्या के कारण भरण-पोषण करने के लिए कृषि प्रदार्थों का अधिक से अधिक उत्पादन अतिआवश्यक हो गया , जिसके कारण उर्वरक(फ़र्टिलाइज़र) का प्रयोग धड़ल्ले से किया जा रहा हैं जिसका दुस्प्रभाव मिट्टी पर हो रहा हैं | कृषि के लिए वन क्षेत्रो का ह्रास किया जा रहा हैं | पेड़-पौधे का अधिक से अधिक काटा जाना पर्यावरण पर गहरा दुस्प्रभाव डाल रहा हैं |

बढती जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिए अधिक से अधिक कल-कारखानों का स्थापित किया जाना , जिनसे निकलने वाली जहरीली एवं जानलेवा कार्बन डाई ऑक्साइड गैस , दिन प्रतिदिन मोटर गाडियों की वृद्धि से निकलनेवाली कार्बनमनोऑक्साइड गैसों एवं घरो की चिमनियो से निकलने वाली धुवां , वायु प्रदुषण के महत्वपूर्ण कारण हैं |

जल प्रदुषण या जलस्तर का निचे गिरना जनसंख्या वृद्धि ही के कारण हैं | फैक्ट्रीयो से निकलने वाले जहरीले पदार्थो का जलाशयों में गिरना , शहरों से निकलने वाली नालियों का गन्दा पानी जलस्रोतो में मिलने से जल प्रदुषण दिनोदिन बढ़ता जा रहा हैं | प्रदुषित जल के उपयोग से हम सभी विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित हो रहे हैं | जैसे कहा जाता हैं -”जल ही जीवन हैं “, स्वच्छ जल होगा तभी जीवन सुरक्षित रहेगा |

आये दिन हम पोलोथिन एवं उनसे बने वस्तु को धड़ल्ले से प्रयोग कर रहे हैं जो कि पर्यावरण के लिए घातक साबित हो रहा हैं | इसे जलाने पर वायु प्रदुषण ही नही, बल्कि मिट्टी ओर नालियों के लिए भी समस्या उत्पन्न हो रही हैं | हम सभी खली बाज़ार जाते हैं ओर प्लास्टिक के थेलो में फल सब्जियों एवं अन्य खाद पदार्थो को भरकर लाते हैं ओर जहाँ तहां फेंक देते हैं , जो उड़कर नदी नाले समुद्र तक पहुँच जाता हैं, जहाँ जल प्रदुषित करता रहता हैं, ओर यदि यह मिट्टी में दब गया तो सदियों तक सड़ता गलता नही हैं ओर न तो इसे जीवाणु-विषाणु नष्ट कर सकता हैं |

पृथ्वी पर जीवन सुरक्षित रहे इसके लिए सरकार के साथ हमे भी पर्यावरण सुरक्षा में सहभागी बनना होगा |

1. जनसंख्या पर नियंत्रण हो - 'कहा गया हैं छोटा परिवार सुखी परिवार , हम दो हमारे दो | अब ये नारा बदलकर "हम दो हमारे एक " का होना चाहिए | इसके लिए सरकार द्वारा शख्त नियम बनाना होगा |
2. अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाना होगा | जितना पपेड़-पौधों की कटाई हो, उस अनुपात में पेड़-पौधों को लगाना होगा | इस प्रयास के अंतर्गत पर्यावरण विथ सुन्दरलाल बहुगुणा के द्वारा चिपको आन्दोलन चलाकर , पर्यावण सुरक्षा का उपाय सुझाया गया | रक्षा बंधन के अवसर पर पेड़ -पौधों को राखी बांधकर उनके सुरक्षा का उओय सुझाया गया, जो की एक अच्छा कदम कहा जा सकता हैं |
3. पोलोथिन एवं पोलोथिन से बने वस्तुओं के प्रयोग से बचना होगा | ऐसा तभी संभव होगा, जब सरकार इसके उत्पादन पर रोक लगाये ओर हमे जुट से बने थेलो का उपयोग करना होगा , जो की आसानी से नष्ट किया जा सकता हैं |
4. अनाज उत्पादन में रासायनिक खादों का न प्रयोग कर हर्बल खादों के प्रयोग पर बल देना होगा |
5. जलस्रोत बना रहे इसके लिए जलसंरक्षण का उपाय लोगों में जागरूकता लाकर किया जाये | वर्षा जल का संग्रह करने का उपाय सुझाया जाये |

पर्यावरण ओर जन जीवन सुरक्षित तभी होगा जब सरकार के साथ साथ हम भी जागरूक रहे |

शंकर रविदास
तृतीय वर्गीय कर्मी
आर० एस० मोर कॉलेज, गोविंदपुर

बच्चो के काका कलाम

दक्षिण के रामेश्वरम में जन्मे ।
इनकी वृतांत हैं , अजीब न जाने कैसे लम्हें ।।

बचपन में गरीबी से संघर्ष करते,
बन गये वैज्ञानिक मुसीबतों को पार करते–करते,
बच्चों के लिए बन गये काका कलाम,
समाज में शिक्षक पथप्रदर्शक बन के किया काम

दक्षिण के रामेश्वरम में जन्मे ।
इनकी वृतांत हैं , अजीब न जाने कैसे लम्हें ।।

इच्छा पायलट बनने की,
बने मिसाइल मेन,
किये अविष्कार मिसाइलो का,
दिया मंत्र आतंक से निपटने का,
दी भारत की सोच को,
अग्नि कि उड़ान,
बढाया हमारे भारत देश का शान ।

दक्षिण के रामेश्वरम में जन्मे ।
इनकी वृतांत हैं , अजीब न जाने कैसे लम्हें ।।

2002 के राष्ट्रपति बन,
कया कार्य महान,
कर्मयोगी भविष्यदृष्टा को ,
इस शख्शियत कलाम को,
जो सम्मानित हुए भारत रत्न से,
आखिरी सलाम हार्दिक ह्रदय से ।

दक्षिण के रामेश्वरम में जन्मे ।
इनकी वृतांत हैं , अजीब न जाने कैसे लम्हें ।।

जय हिन्द ।
जय भारत ।

रचना – अमित कुमार मंडल
Economics Hons.
B. A. Sem IV (2017-2020)

शिक्षा का महत्व

आज के इस युग में
जिसने न की पढाई

उसके पुरे जीवन की
बहुत कठिन हैं चढ़ाई

बुध्धि के बल पर
कमजोर भी जीत सकते हैं
अपने दुश्मनों से लडाई

जिसे जीवन में न मिली शिक्षा ,
वो मांगेंगे दुसरो से भिक्षा

जिसने पा ली अच्छी शिक्षा
पूरी होगी उसकी हर इच्छा

उसका होगा हर जगह सम्मान
जिसे मिला हैं गुरु का ज्ञान
गुरु ही हैं हमारे इस धरती के भगवान्

चाहे क्यों न हो अज्ञानी के पास
पैसा, बंगला या कार
बिना ज्ञान के इस दुनिया में
सब कुछ हैं बेकार

जिसने नही समझा शिक्षा का महत्व
उसके जीवन में हैं अन्धकार

रचना – रीमा दत्ता
Political Science
B. A. Sem III (2018-2021)

शिक्षा का ज्ञान

एक शिक्षक किताबी ज्ञान देता हैं
एक आपको विस्तार समझाता हैं
एक स्वयं कार्य करके दिखाता हैं
और एक आपको रास्ता दिखाकर आपको उसपर चलने के लिए छोड़ देता हैं
ताकि आप अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बना सके ,
यह अंतिम गुण वाला शिक्षक सदेव आपके भीतर प्रेरणा के रूप में रहता हैं
जो हर परिस्थिति में आपको संभालता हैं
आपको प्रोत्साहित करता ह

रचना –सबा परवीन

Political Science
B.A Sem III(2018-2021)

शिक्षा का महत्व

शिक्षा ही हैं मानव का आधार
शिक्षा बिना आधा हमारा परिवार
शिक्षा ही हैं संस्कार
शिक्षा ही हैं पुरस्कार
शिक्षा ही हैं शिष्टाचार
शिक्षा ही हैं उचित विचार
शिक्षा ही हैं बड़ो का आदर
शिक्षा ही हैं परोपकार
शिक्षा ही देता अधिकार
इसीलिए शिक्षा ही हैं संस्कार

रचना – मुकेश कुमार महतो

Political Science
B.A Sem IV(2017-2020)

क्यों

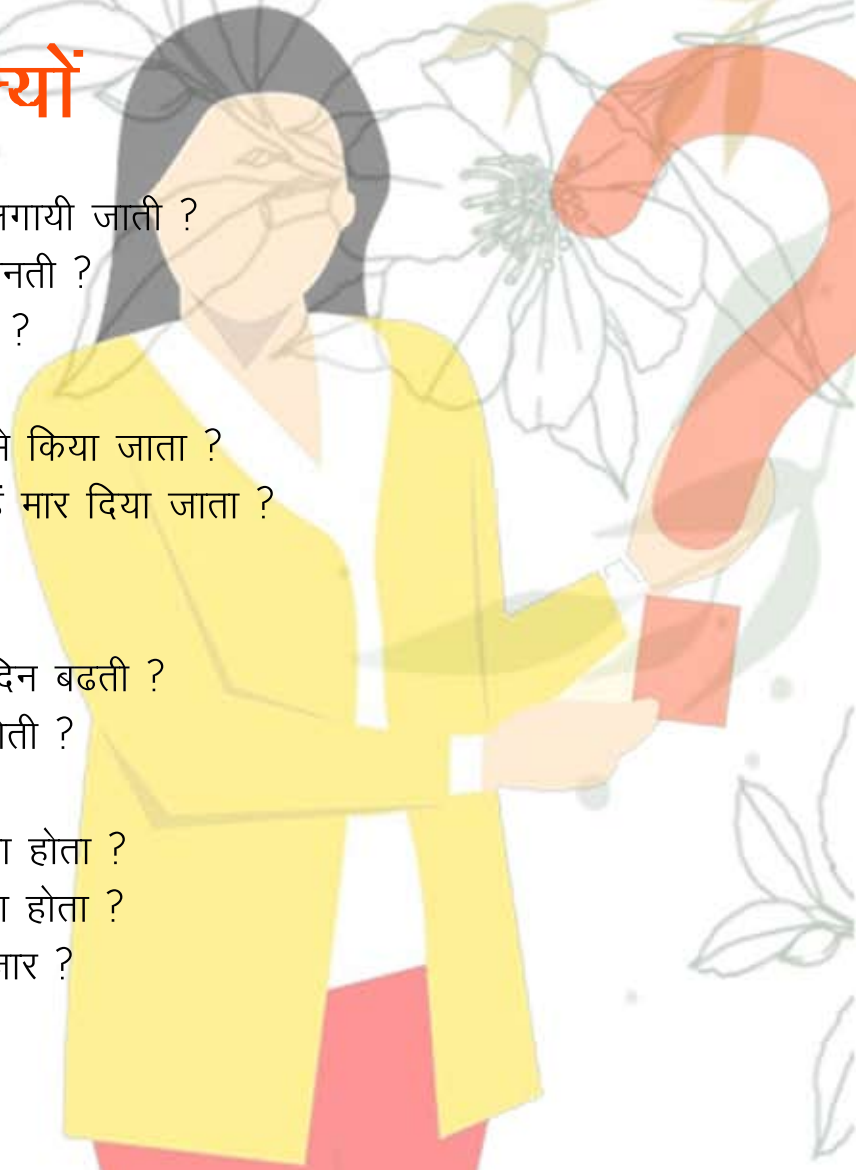

क्यों हम लडकियों पर इतनी पाबंदिया हैं लगायी जाती ?
क्यों ये समाज लडकियों को ही दोषी है मानती ?
क्यों इतने अत्याचार हम औरतो पर हैं होते ?

क्यों लड़कों के छेड़ने पर घर में कैद है हमे किया जाता ?
क्यों लडकियों के जन्म से पहले ही है उन्हें मार दिया जाता ?

क्यों एक ना की कीमत तेज़ाब है होती ?
क्यों इस देश में निर्भया की संख्या है प्रतिदिन बढती ?
क्यों एक माँ इंसाफ के लिए दिन रात है रोती ?

क्यों औरतो को दहेज़ की आग में है जलना होता ?
क्यों अपने अधिकारों के लिए है उन्हें लड़ना होता ?
क्यों एक इंसाफ के लिए हैं सालो का इंतजार ?
इंसाफ के मंदिर तो यहाँ है बहुत
पर क्यों उनमे कोई भगवान नही बसते ?

रचना – निकिता कुमारी
अर्थशास्त्र प्रतिष्ठा

नारी शक्ति

नारी शक्ति अब जाग उठी हैं
अपना हक़ वो लेना जान चुकी हैं ।।
नौ माह तक अपने शिशु को
जो कोख में लेकर रखती हैं ।
इतनी पीड़ा सहकर भी जो
भूले से कुछ न कहती हैं ।
नारी शक्ति को कोई न समझा
कितनी पीड़ा को वो सहती हैं ।
नारी तेरा नारीत्व नहीं किसी का मोहताज हैं ।
स्वयं को पहचान नारी
तुझमे शक्ति अपार हैं ।
ठोकर मार उन्हें जो तेरा सम्मान करना न जाने ..
साहस, दया, त्याग ममता की प्रतिक
नारी शक्ति तू ही कहलाती हैं ।
खुद भूखा रहकर भी जो ,
बच्चो की भूख मिटाती हैं ।
यही नारी तो हमारे देश की
नारी शक्ति कहलाती हैं ।
नारी शक्ति न जाने तेरे कितने रूप हैं –
माँ, बहन , पत्नी बनकर सबके दुःख तू हरती हैं ।
नारी शक्ति अब जाग उठी हैं
अपना हक़ वो लेना जान चुकी हैं ।

रचना – मनीषा कुमारी
Political Science(H)
B.A Sem IV(2017-2020)

कोरोना पर कविता
मुझसे डरो ना ....

कल रात सपने में आया कोरोना ....
उसे देख जो मैं डराती मुस्कुरा के बोला
मुझसे डरो ना.....

उसने कहा दृ कितनी अच्छी हैं तुम्हारी संस्कृति द्य
न चुमते , न गले लगाते
दोनों हाथ जोड़ कर वो स्वागत करते,
मुझसे डरो ना ...

कहाँ से सिखा तुमने ?
रूम स्प्रे , बॉडी स्प्रे,
पहले तो तुम धुप,
दीप, कपूर, अगरबत्ती, लोभान जलाते
वही करो ना
मुझसे डरो ना....

शुरू से तुम्हे सिखाया गया
अच्छे से हाथ पैर धोकर घर में घुसो,
मत भूलो अपनी संस्कृति
वही करो ना
मुझसे डरो ना....
उसने कहा सादा भोजन उच्च विचार
यही तो हैं तुम्हारे संस्कार द्य
उन्हें छोड़ जंक फूड फ़ास्ट फूड के चक्कर में पड़ो ना
मुझसे डरो ना ....

उसने कहा शुरू से ही जानवरों को पाला–पोसा प्यार दिया
रक्षण की हैं तुम्हारी संस्कृति , उनका भक्षण करो ना
मुझसे डरो ना

कल रात मेरे सपने में आया कोरोना
बोला मुझसे डरो ना ...

रचना – मिली कुमारी

Political Science(H)
B.A Sem IV

आज की लडकियां

सुनीता विलियम्स बनना चाहती हैं आज की लडकियां
टीवी छोड़ कंप्यूटर चलाना चाहती हैं आज की लडकियां
शादी छोड़ पढाई में मन लगाना चाहती हैं आज की लडकियां
रसोई छोड़ कॉलेज जाना चाहती हैं आज कि लडकियां
लडको को पीछे छोड़ आगे जाना चाहती हैं आज की लडकियां
विश्व में सर्वप्रथम स्थान पाना चाहती हैं आज की लडकियां
बूढ़े माँ– बाप का सहारा बनना चाहती हैं आज की लडकियां

रचना – ममता बर्मन

EconomicsH)

छात्र- शक्ति

"हम अगर कहीं जाएंगे तो हमारे कंधे पर उन दबी हुई आवाजों की शक्ति होगी जिनको बचाने की बात हम सड़कों पर करते हैं. अगर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा होगी तो भगत सिंह जैसे शहीद होने की महत्वाकांक्षा होगी, न कि इलेक्शन में गांठ जोड़कर चुनाव जीतने और हारने की महत्वाकांक्षा होगी."

"हमारी आने वाली पीढ़ियां सवाल करेंगी, वे हमसे पूछेंगी कि जब नई सामाजिक ताक़तें उभर रही थीं तो आप कहां थे, वे पूछेंगी कि जब लोग जो हर दिन जीते-मरते हैं, अपने हक़ के लिए संघर्ष कर रहे थे, आप कहां थे जब दबे-कुचले लोग अपनी आवाज़ उठा रहे थे, वे हम सबसे सवाल करेंगीं."

रचना - अफरोज अंसारी

राजनीति शास्त्र विभाग

Climate Change

Climate change, which is brought about by urbanization, is a grave issue that we are dealing with. Climate change is an issue that we are all worried about and whose impact is felt by all of us.

The definition of climate states that the word 'climate' is used to refer to long term periodic variations in the weather patterns that are observed over centuries. Ever since the earth was created, it is going through many changes simultaneously, and this leads to climate change. Climate change happens cyclically, it had started from a colder ice age, and at the very present, it is much warmer than it was two million years ago. All these millions of life forms we see on earth today is because of the non-stop energy received from the Sun, which is the ultimate source of energy, which is continuously fuelling the weather system.

To jot down a few notable changes, the world is experiencing arbitrary droughts, unexpected weather patterns and sudden rainfall and snowfall, there is a constant fluctuation in the temperatures leading to disasters like a forest fire, and the weather is no longer predictable enough. The changes are random, and it is getting stressful day by day even to keep track of the changes occurring. These changes have drastically influenced human lives in both positive and negative ways.

Ever since evolution has taken place, humans are continually using nature for their benefits. This has caused various effects. Some of these are – huge carbon dioxide content in the environment and other harmful materials in the atmosphere and water. The constant exploitation of natural resources and taking no significant steps to make the situation better have resulted in the accumulation of harmful gases in the environment. The ozone layer depletion caused by greenhouse gases is also due to climate change.

These changes that we have caused to the ecosystem are not reversible. The only thing we can do is try to make the biosphere a better place to live in.

Roshan Kumar Jha

History Hons. (Sem. 1)

कोविड 19 और हमारा पर्यावरण

भारत और विश्व के लिए इस आधुनिक युग में पर्यावरणीय समस्या एक महत्वपूर्ण चुनौती रही हैं । यह कहना भी कुछ गलत नही होगा कि जैसे जैसे मनुष्य आधुनिकीरण, प्रोधोगिकीकरण की ओर बढ़ा हैं, उसने कही न कही पर्यावरण को हानि पहुंचाई है । आज हमारे सामने ऐसे ही एक गंभीर समस्या उत्पन हुई है, जिसने न केवल हमारे देश, बल्कि पुरे विश्व में तबाही मचा रखी हैं । इस गंभीर समस्या का नाम हैं "कोविड 19" , जो एक विश्वव्यापी समस्या बन चुकी हैं । यह एक खतरनाक वायरस है जिसे पुरे विश्व ने महामारी घोषित किया है । कई रिपोर्टो और एजेंसियों के मुताबिक, ये वायरस दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान शहर में पहली बार सामने आया था । अमेरिकी खुफ़िया एजेंसियों ने ये दावा किया है कि यह वायरस चीन के वुहान शहर के लैब से आया हैं, हालाकि इसकी पूरी पुष्टि नही की गयी हैं । अंततः हम यह कह सकते हैं कि जाने–अनजाने में ही सही पर कही न कही इसके पीछे का कारण हम मनुष्य ही हैं ।

कोरोना महामारी के कारन पुरे देश और बाकि अन्य देशो में भी लॉकडाउन का सहारा लेना पड़ा । अचानक से उत्पन हुई इस महामारी से निपटने का यही एकमात्र उपाय था । कोरोना महामारी के कारण हुई लॉकडाउन से कुछ हो न हो, हमारे पर्यावरण को बहुत फायदा पंहुचा हैं, जैसे कि :–

1 प्रदुषण स्तर कम हो गया था :– लॉकडाउन के कारण जरुरत की आवश्यक चीजो को छोड़कर . बाकि सभी चीजा पर पाबन्दी लगा दी गयी । इससे न केवल उद्योग दृघंदे, कल–कारखाने बंद हो गये, बल्कि बिना किसी इमरजेंसी कारण के लोगो की गाड़ियां चलाने पर भी रोक लगा दी गयी, इससे प्रदुषण स्तर में काफी सुधार आया था ।

2 हवा की गुणवक्ता अच्छी हो गयी थी :– लॉकडाउन के कारण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्पण कम हुआ था, जिसने हवा की गुणवक्ता में काफी सुधार आया था ।

3 नारियो का पानी स्वच्छ हो गया था :– लॉकडाउन से गंगा और यमुना जैसी नदियों का पानी स्वच्छ हो गया था । लॉकडाउन होने के कारण लोगों का घरो से निकलना मना हो गया था, ऐसे में उनके द्वारा किये जाने वाला दैनिक क्रियाए और फैके जाने वाला कचरा बंद हो गया था, साथ ही कल–कारखाने से निकलने वाले ख़राब अवशेष भी नदियों में नही फैका जा रहा था, जिससे नदियों का पानी साफ़ हो गया था ।

हवा की गुणवत्ता, नदियों का पानी, शहरो में बढ़ता प्रदुषण हम इक्कीसवी सदी वालों के लिए बहुत ही गंभीर समस्या रही हैं, जिसमे लॉकडाउन के कारण काफी हद तक गिरावट देखने को मिली थी । अतः हम कह सकते हैं कि कोरोना महामारी के कारण हुई लॉकडाउन ने पर्यावरण को बहुत लाभ पहुँचाया हैं, जिससे प्राकृतिक सौन्दर्य और हरियाली फिर से देखने को मिली ।

दूसरी और कोरोना के कारण कई दुस्प्रभाव भी हुए हैं । अचानक आई इस महावरी ने लाखो लोगो की जान ले ली, उससे भी ज्यादा लोग बीमार पड़े, कइयो की जिंदगियां बर्बाद हो गयी, कई लोग बेरोजगार हो गये द्य लॉकडाउन की वजह से तमाम फैक्ट्री बंद हो गयी, यातायात के सारे साधन बंद हो गये, अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचा, शिक्षा को भी इसने बहुत प्रभावित किया ।

निष्कर्ष :– आज जो भी हमारे हालत हैं , ये और कुछ नही हमारे ही किये गये कर्मो का फल हैं । हम हर मंच पर , स्कूल में, कॉलेज में, और सभी सरकारी तथा गैर–सरकारी संस्थानों में केवल यह शपथ ही लेते हैं कि हम पर्यावरण, प्रकृति की रक्षा करेंगे, परन्तु हम सभी कही न कही इस शपथ को पूर्ण नही करते, तभी तो आज हमे ऐसी विनाशकारी प्रकोप को इन दिनों काफी करीब से देखना और महसूस करना पड़ रहा हैं । आज हर तरफ सुपर पॉवर की रेस दिख रही हैं, कही ऐसा न हो कि हमारा आज का किया आने वाले कल को ख़त्म कर दे । इसलिए हमें सही मायने में हर एक इंसान में सुधार लानी होगी, हमे मिलकर काम करना होगा, तभी आने वाली पीढियों की निगाहों मं हमारी इज्जत होगी ।

रचना – प्रतिमा कुमारी
रसायनशास्त्र (आनर्स)
(2018–2021)

कोरोना को दूर भगाओ

फंसी हुई है दुनिया कैसे

कोरोना महामारी के प्रकोप से

कैसी ये महामारी आई

थक गयी दुनिया सारी

मंदी ने तोड़ी है कमर

दुनिया के कारोबारों की

अपने आप को कोरोना से बचाओ

मुँह पर मास्क लगाओ

सबके हाथ सेनीटाइजर से धुलवाओ

हैंड वॉशिंग को जीवन का आधार बनाओ।

सोशल डिस्टेन्सिंग को अपनाओ

कोरोना को दूर भगाओ

कोरोना महामारी से न घबराओ

सावधान एवं स्वच्छ रहकर इसे हराओ

सर्दी खांसी और बुखार

ये हैं लक्षण कोरोना के

खुद में ये लक्षण पाओ

भागकर कोविड की जांच करवाओ

कोरोना से न घबराओ।

मिलकर इसको दूर भगाओ।

रचना – मनीषा कुमारी
Political Science(H)
B.A Sem IV(2017-2020)

शोक संदेश

इंटर संकाय के इतिहास विभाग के शिक्षक श्री राजकुमार पाल का निधन इस वर्ष जून माह में हो गया। इस दुखद समाचार से पूरा महाविद्यालय परिवार बेहद स्तब्ध एवं सदमे में हैं।

कोलकुसमा , धनबाद के रहने वाले श्री पाल इतिहास के सिद्धहस्त विद्वान शिक्षक थे। उन्होंने पूरी तन्मयता से महाविद्यालय परिवार की सेवा दो वर्षों तक की एवं असमय ही हम सब को छोड़कर प्रस्थान कर गए।

उनके निधन से महाविद्यालय परिवार को अपूर्णीय क्षति हुई है। आर एस मोर महाविद्यालय परिवार स्वर्गीय राजकुमार पाल के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि निवेदित करता है।

प्राचार्य

Eklavya

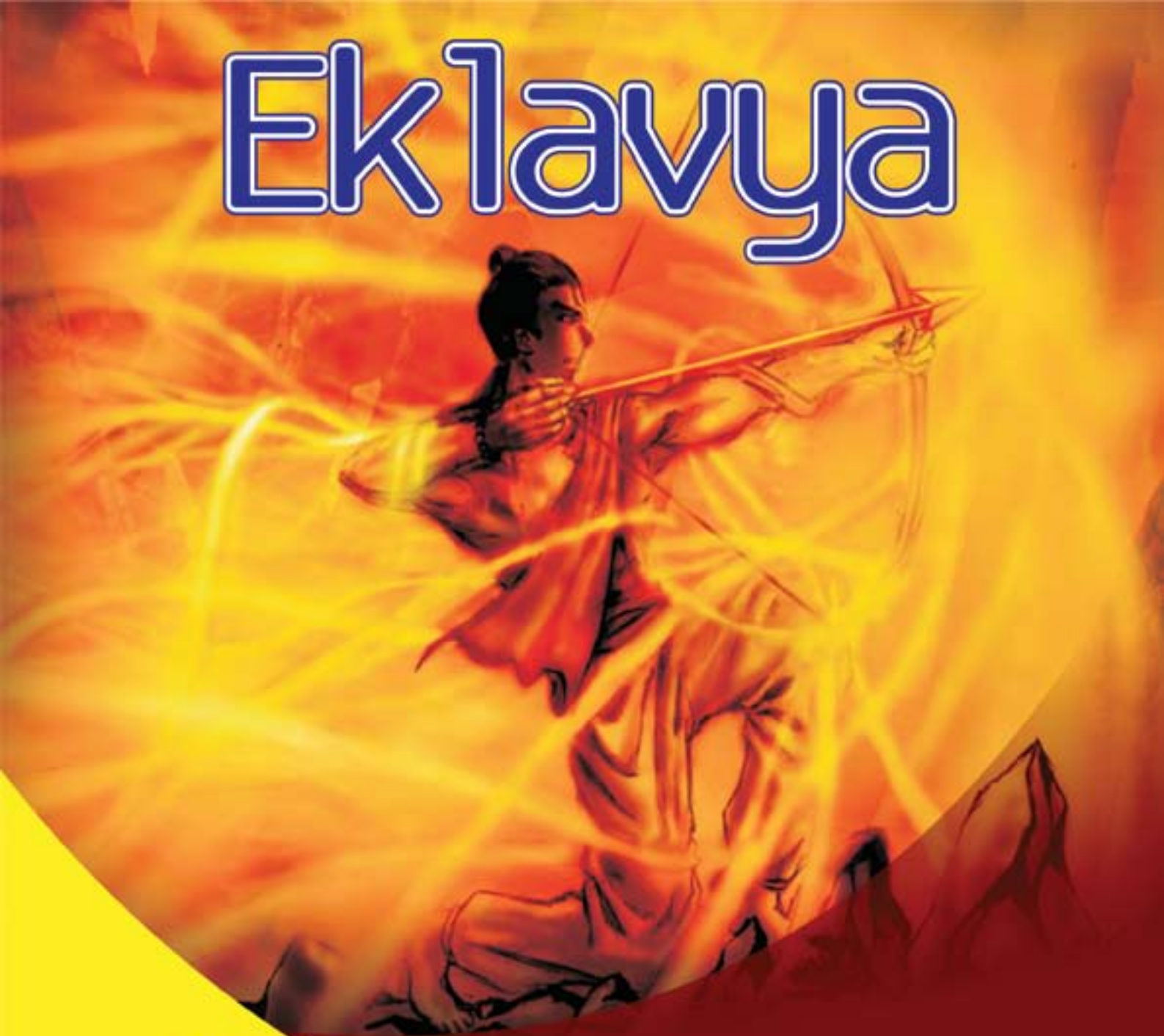

R. S. MORE COLLEGE

RATANPUR VILLAGE ROAD, GOVINDPUR
DHANBAD, JHARKHAND - 828109

: rsmorecollege@rediffmail.com
: www.rsmorecollege.edu.in